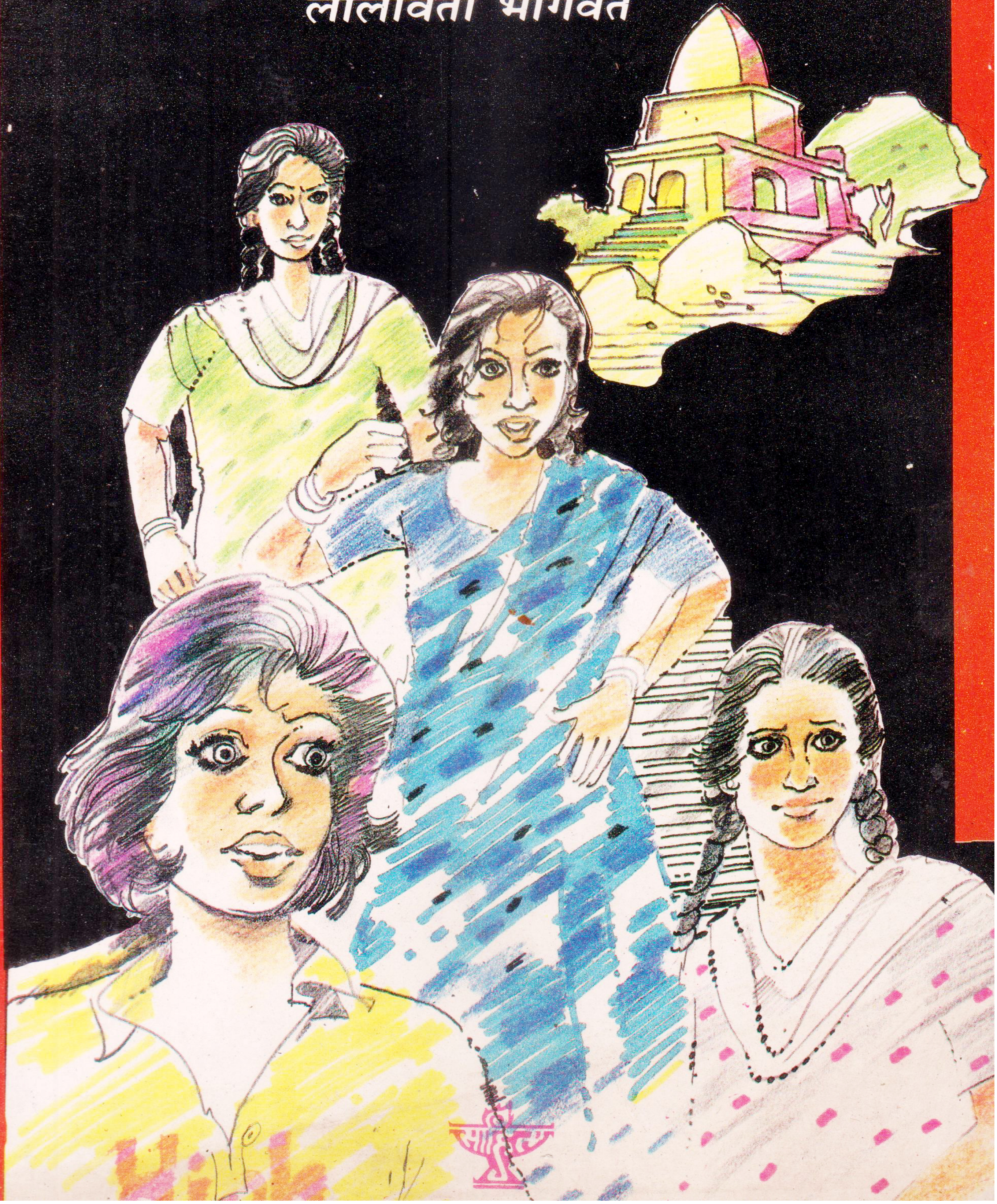
जंगल की एक रात

लीलावती भागवत



जंगल की एक रात

लीलावती भागवत

अनुवाद
अरूंधती देवस्थले

रेखांकन
सुबीर राय

साहित्य अकादेमी

Jungle Ki Ek Raat : Hindi translation by Arundhati Deosthale of Leelavati Bhagwat's fiction 'Ranatali Raat' in Marathi, Sahitya Akademi, New Delhi (1994) Rs. 25.

प्रथम संस्करण : 1994

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह रोड, नयी दिल्ली 110 001

बिक्री केन्द्र

स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

प्रादेशिक कार्यालय

जीवन तारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल,
23ए/44 एक्स., डायमंड हार्बर मार्ग,
कलकत्ता 700 053

172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

गुना बिल्डिंग, दूसरी मंज़िल,
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट
मद्रास 600 018

एडीए रंगमन्दिर,
109, जे.सी. मार्ग,
बंगलोर 560 002

ISBN : 81-7201-535-6

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक :

रूपाभ प्रिंटर्स, 4/115, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32

पातालेश्वर

जाने कैसा होगा पातालेश्वर ? क्या पहाड़ी की खाई में उतर पाएँगे हम लोग ? बंबई वापस लौटनेपर जब क्लास की सारी लड़कियों को इस सैर के बारे में बताऊँगी तब वे सचमुच हैरान रह जाएँगी ...

मीना के सिर पर सुबह से ही पातालेश्वर जाने की धुन सवार थी । वह किसी और चीज़ के बारे में सोच नहीं पा रही थी, न जाने कब घड़ी में दो बजेंगे ! उसकी बेसब्री देखकर मौसी ने कहा भी, "अरे मीना, खाना तो ठीक-से खा ले । पातालेश्वर का रास्ता दूर का है, चलकर जाने के लिए ताक़त भी तो चाहिए ... !" आख़िर बैठक के कमरे-से दो बजने की सूचना मिली और उसने देखा कि गौतमी दरवाज़े पर खड़ी थी ।

"तुम तैयार हो ना, मीना ?"

"हाँ, लेकिन तुम अकेली ? क्या यमू साथ नहीं आयी ?"

"यमू का घर तो रास्ते में पड़ता है । उसे जांते-जाते वहाँ से ले लेंगे ।"

"ठीक है, चलो चलें ! चलो स्वाति ! अच्छा मौसी, हम चलते हैं ।"

"मीना, पानी की बोतल ले ली ? और भेलपूरी की थैली ?"

"सब कुछ ले लिया है मौसी ! चिंता न करो । कहो तो आपके लिए पातालेश्वर के सोते का ठंडा पानी भर लाएँ इस बोतल में ?" कहकर खिलखिलाती हुई वह तीनों निकल पड़ी । यमू भी तैयार होकर न जाने कब-से उनकी प्रतीक्षा कर रही थी । उनके आते ही माँ से अलविदा कहकर हाथ में चार लाठियाँ लीं और वह उनके साथ चल पड़ी ।

"हाँ, यह ले लो, एक-एक पकड़ लो हाथ में ।"

"यमू ये कैसी लाठियाँ हैं ?" स्वाति ने आश्चर्यपूर्वक पूछा ।

"लाठी नहीं, ये लठ हैं, बबूल की लकड़ी से बने हैं ।"

"बबूल के ? लेकिन इनमें तो काँटे नहीं हैं ।"

"काँटे होते तो चुभते नहीं हमारे हाथों में ? मैंने वे घिस-घिसकर निकाल दिये हैं।"

वे चारों पातालेश्वर की तरफ़ जानेवाली सड़कपर चलने लगीं। जब तक वह गाँव के अंदर से गुज़र रही थीं तब तक घर, स्कूल और सहेलियों की बातें हो रही थीं। धीरे-धीरे गाँव पीछे छूटने लगा और वे खुली सड़क पर आ गयीं।

मौसम सुहावना था और धूप भी गुनगुनी थी। आसमान में बादल छितरे पड़े थे लेकिन तेज़ हवा भी चल रही थी। वह सब खुशी-खुशी बड़े मज़े से चल रही थीं।

"मीना दीदी, यह देखो इस तरफ़ कितना बड़ा बगीचा है पीले फूलों का।"

"धत् ! वह बगीचा थोड़े ही है ? वह तो टाकले का खेत है।"

"किस चीज़ का ? अगर यह खेत है तो यह फूलों के पौधे कैसे ?"

"टाकला बड़े काम की चीज़ है। इसमें कई दवाइयों के गुण हैं। तभी तो इसको खेत में लगाकर काफ़ी सारी पैदावार करते हैं। इनके पीले फूलों में बड़ी तेज़ महक़ होती है। वह खाने में भी कड़वे लगते हैं। लेकिन पथ्य के तौर पर इन फूलों की सब्ज़ी बनाकर खायी जाती है।"

"फूलों की सब्ज़ी ?" स्वाति ने आश्चर्य प्रकट किया।

"हाँ भाई हाँ ! यहाँ गाँव में कई फूलों का सब्ज़ी के रूप में प्रयोग किया जाता है। अगस्त के फूल, सहजन के फूल वगैरह।"

"यमू, लेकिन इस स्वाति की बंबई में तो सिर्फ़ एक फूल की सब्ज़ी बन सकती है—फूल गोबी की ! है ना ?" गौतमी ने पूछा। उसके मज़ाक़ पर वे सभी हँस पड़ीं।

"लेकिन मीना, आज तुम्हारी मौसी ने तुम्हें आने की इज़ाज़त कैसे दे दी ?" यमू ने पूछा।

"वह तो नहीं दे रही थी ! लेकिन मैंने मौसाजी को मना लिया था और फिर तुम और गौतमी साथ हो; हम पातालेश्वर से इधर-उधर कहीं न जाकर अँधेरा होने से पहले सीधे घर लौट आयेंगे—इसी शर्त पर मौसी ने इज़ाज़त दी है।"

"इधर-उधर नहीं जायेंगे ?"

"क्या मतलब ? सिर्फ़ पातालेश्वर के दर्शन-कर कर उलटे पाँव लौट आयेंगे ? तो फिर इस भेलपूरी का क्या काम ?"

"और कहाँ जाना चाहती हो गौतमी ?"

"मीना, पहले हम खाई में नीचे तक उतर कर पातालेश्वर देखेंगे, फिर उसके ऊपरी सिरे तक जाकर सोते के किनारे बैठकर भेलपूरी खायेंगे और ठंडा-ठंडा, मीठा पानी पीएँगे ...।"

"अरे नहीं भाई, पानी-वानी नहीं पीयेंगे। पता नहीं वहाँ का कैसा पानी है। कहीं बीमार ही न हो जाएँ। तभी तो यह पानी की बोतल दी है मौसी ने," स्वाति ने कहा।

"इसे लटकाये रखना अपने कंधे पर, उस सोते के पानी से कोई बीमार नहीं होता," यमू

ने गौतमी की बात काटते हुए कहा ।

"हाँ, कोई भला बीमार क्यों होने लगा ? हर रोज़ यहाँ एक बाघ जो पानी पीने आता है... ।"

"बाघ ?"– स्वाति चिल्लायी, "क्या हम उस सोते के पास जायेंगे जहाँ हर रोज़ बाघ आता है ?"

"हर रोज़ तो नहीं लेकिन अक्सर आता है। वैसे वह आ भी जाए तो हमें कुछ नहीं करेगा, है ना गौतमी ?"

"और क्या ? मीना, तुझे पता है, उस रोज़ हम टहलते हुए यों ही चले गये थे, उस सोते के पास । इस पार हम बैठे थे और उस पार वह बाघ ! वह आया, उसने हमारी तरफ़ देखा और फिर पानी पीकर चुपचाप चला गया !"

"हाँ ! और मीना, हमें पिताजी ने जैसा बताया था, हम वैसे ही चुपचाप बैठे रहे, अगर बाघ दिखायी भी दे, तो शोर नहीं मचाना है, हाथ में डंडा हो तो भी उसे नहीं दिखाना है । फिर बाघ भी कुछ नहीं करता, चुपचाप चला जाता है !" यमू ने विस्तार से बताया ।

"अच्छा !"

"बिल्कुल ! वह खा-पीकर यहाँ बस पानी पीने आ जाता है । पानी पीकर वह अपना रास्ता नाप लेता है, वह भला हमें क्यों कुछ करने लगा ? हाँ, अगर उससे कोई छेड़खानी करे तो वह ज़रूर ... "

"बाघ के साथ छेड़खानी ... तौबा तौबा !" मीना ने सिहरकर कहा ।

"लेकिन हमारी मीना दीदी तो तेरह फ़ीट तक दूरी फाँद लेती है अपनी लम्बी कूद भरकर। बाघ की छलाँग तो बारह फ़ीट तक ही होती है ? मीना दीदी तो बाघ से भी तेज़ है । है ना ? उसके मास्टरजी भी कह रहे थे कि वह तो शेर को भी हरा सकती है," स्वाति ने बड़े गर्व से कहा।

"तुम्हें क्या लगता है, बाघ मेरे साथ शर्त लगाकर और फिर अपनी हार मानकर चुपचाप चल देगा ..." मीना ने हँसकर कहा ।

"अब चुप भी करो ! हमें पहाड़ी पर चढ़ना है । एक पहाड़ी चढ़कर दूसरी पर उतरना है, तब आएगा पातालेश्वर । है ना ?"

गौतमी के कहने के अनुसार उन्होने तेज़ी से पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया । वैसे पहाड़ पर पगडँडी तो बनी हुई थी । लेकिन फिर भी रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था । दोनों तरफ़ पेड़ बहुत बढ़ गये थे। वह चारों बीच-बीच में अपने बबूल के लठ उनपर चलाती थीं । उससे पके हुए पत्ते नीचे गिर जाते। थोड़ा-सा खुलापन आ जाता और टहनियों के जाल से कहीं सूरज नज़र आता । पैर के नीचे पत्तों की मर्रमर् ... मर ... आवाज़ होती ।


SPY

"मीना दीदी, देखो उस गिलहरी को ! कैसे दौड़कर पहुँच जाती है पेड़पर !"

"स्वाति, ऊपर देखो ! और मीना तुम भेलपूरी की थैली का ध्यान रखना ! हनुमानजी के पोते-परपोते मौक़े की ताक में रहते हैं," यमू ने कहा ।

आसपास के पेड़ों पर काफ़ी बंदर नज़र आ रहे थे । पेड़ों की शाखाओं से लटकतीं वे लंबी-लंबी पूँछें । बंदर गर्दन टेढ़ी करकर उन चारों को घूर रहे थे । पहाड़ी की तीन चौथाई ऊँचाई वे लोग पार कर चुकी थीं ।

"उई माँ ... मीना दीदी ...!"

"क्या हुआ स्वाति ?"

"देखो, तो ! मेरे पैर में जलन हो रही है और साथ ही खुजली भी है उफ्फ् ..."

"ओह, कितना लाल हो गया है तुम्हारा पाँव, सूज भी गया है । क्या हो गया अचानक ? लगता है तुम्हें किसी ने काटा है, साँप तो नहीं होगा ना ?" मीना ने डरते हुए स्वाति का पाँव हाथ में लेकर देखते हुए कहा ।

"आस्तिक आस्तिक काला डोरा ... आस्तिक आस्तिक काला डोरा ..."

"क्या कह रही हो यमू ?"

"कुछ नहीं, साँप के काँटने पर मेरी माँ दो बार यही कहती है, सो मैंने भी कह दिया ।"

"ओह ... माँ ..." कहकर स्वाति पालथी माकर बैठ गयी । वह पैर झटक रही थी ।

"ला, मैं देखूँ तो !" गौतमी ने उसका पाँव उठाकर अपनी गोद में लिया । फिर उसने यमू से कहा, "यमू, ज़रा वह टनटनी के पत्ते देना, वहाँ देखो, वहाँ एक पौधा है ।"

यमू उस तरफ़ जाकर टनटनी के पत्ते तोड़ने लगी ।

"क्या है गौतमी ? क्या इसे किसी कीड़े ने काटा है ?"

"हूँ ... लगता तो ऐसा ही है ।"

"क्या होगा ?" मीना ने सहमी-सहमी आवाज़ में पूछा ।

"कुछ ख़ास नहीं ! उसे एक कीड़े ने काटा है । उसके डंक पाँव में घुस गये हैं और यह सूजन भी उसी वज़ह से है । टनटनी के पत्ते मसलकर लगाने से काँटे अपने आप बाहर निकल आएँगे ..."

यमू जो पत्तियाँ लाई–गौतमी ने स्वाति के पाँवपर ज़ोर-ज़ोर से मसल दीं । उस खुरदरी पत्ती के साथ उस कीड़े के कई काँटे पाँव से बाहर निकल आये । जलन भी कम हो गयी ।

"मीना, ज़रा अपना रूमाल तो देना ..." मीना का रूमाल गौतमी ने सबके सिरपर बारी-बारी से रगड़ा । गौतमी ने अपने सिर में काफ़ी सारा तेल डाला हुआ था, क्योंकि कल उसकी आँखों में जलन हो रही थी । सबके सिर में लगे तेल से रूमाल काफ़ी सन गया था । गौतमी ने

स्वाति के पाँव पर उससे हल्की-हल्की मालिश की। इससे बचे-खुचे काँटे भी बाहर निकल गये। उसने फ़ौरन वह रूमाल झाड़ी मे फेंक दिया। स्वाति को अब काफ़ी राहत महसूस हो रही थी। लेकिन इस चक्कर में उन्हें पंद्रह-बीस मिनट गँवाने पड़े थे। इसलिए अब बिना कुछ बोले उन्होंने आगे की पहाड़ी पर चढ़ना शुरू कर दिया।

उन्होंने लगभग रास्ता तय कर ही लिया था कि बारिश की दो-चार मोटी-मोटी बूँदें उनके ऊपर आ गिरीं।

''यमू, यह बारिश ... अब क्या करें ?'' मीना ने चिंतित होकर पूछा।

''अरे यह तो हल्की-सी बूँदा-बाँदी है। बारिश तो होने से रही, फ़िक्र न करो मीना, यह तो हल्की-सी फुहार भर है। वह आयी और चली गयी।''

''और मीना यह जो तेज़ हवा चल रही है ना, वह तो हम लोगों के लिए बहुत ही अच्छी है—खाई में उतरने के लिए हवा के साथ ही हम अपने आप खिंचे चले जाते हैं।''

गौतमी का कहना तो बिल्कुल सही निकला। खाई में उतरते समय हवा ने उनकी काफ़ी सहायता की। उन्हें जैसे हवा अपने पंखों पर बिठाकर आगे ले जा रही थी।

जब वह खाई के अंदर उतर आयी तो उन्हें काले चट्टानों के बीच बसा पातालेश्वर नज़र आया। शांत-शीतल, वहाँ कोई मंदिर तो नहीं बना हुआ था लेकिन पहाड़ी की प्राकृतिक ढलान से अच्छा पूजाकक्ष-सा बन गया था। दाहिनी तरफ़ जो पारिजात का पेड़ था—उसकी शाखा ने सुबह-सुबह पातालेश्वर पर फूल अर्पण किये थे। ये सफ़ेद फूल अब कुछ मुरझा अवश्य गये थे लेकिन उनकी भीनी-भीनी खुशबू अब भी हवा में बसी थी। किसी नास्तिक को भी श्रद्धालु बनाने वाला वह दिव्य और निःशब्द परिवेश।

उन चारों के हाथ अनायास ही जुड़ गये। कुछ देर तक किसी ने कुछ भी नहीं कहा। फिर अचानक गौतमी ने कहा, ''मीना, परीक्षा में सफलता वगैरह चाहो तो माँग लो और फिर चलो सोते के किनारे। वहाँ जाकर पेट-पूजा करनी है।''

गौतमी की बात सुनकर जैसे सबको होश आ गया। पातालेश्वर को एक बार फिर प्रणाम कर वे वहाँ से चल पड़ीं।

खाई से निकलकर वह दो-तीन फर्लांग तक आगे बढ़ गयीं और सोते के किनारे आ गयीं। सोता था भी सँकरा-सा, बस होगा यही कोई आठ-दस फीट चौड़ा और इसमें बहता हुआ साफ़ निर्मल पानी।

मीना ने भेलपूरी की थैली नीचे रख दी। स्वाति ने उसमें से काग़ज़ निकाले। काग़ज़ उड़ न जाएँ, इसलिए उनपर छोटे-छोटे पत्थर रख दिये। यमू ने सबको भेलपूरी परोस दी—और सबने पेटपूजा शुरू कर दी। पहाड़ी पर चढ़कर और वहाँ से नीचे उतरकर वह सब थक चुकी थीं। उन्हें



बड़े ज़ोरों की भूख लगी थी । देखते-ही-देखते सारी भेलपूरी ख़त्म हो गयी । बातें, हँसी-मज़ाक़ करते-करते थकान न जाने कहाँ ग़ायब हो गयी थी । यमू अपना हिस्सा खाकर सोते के किनारे पानी पीने चली गयी । पानी पीने वह झुकी ही थी कि दबे पाँव लौटने लगी । पानी में अपने प्रतिबिंब के साथ उसे किसी और का प्रतिबिंब भी दिखायी दिया था । वह भाग तो नहीं रही थी लेकिन तेज़ चलकर आ रही थी । वापस आते ही उसने सबको चुप्पी का इशारा किया और पास बहते सोते की ओर संकेत किया ।

धारीदार बदन और दो चमकती आँखें, इस वक़्त तो वह गर्दन झुकाकर पानी पी रहा था लेकिन किसी भी वक़्त वह आँखें उठाकर सामने देख सकता था । यमू के कहने के मुताबिक़ वह सब पुतले जैसी निश्चल होकर स्तब्ध बैठी हुई थीं ।

"ठाँय ..."

अचानक बंदूक़ से गोली चली । उन्होंने देखा कि उनसे कुछ ही फीट की दूरी पर सोते के उसी किनारे पर कोई शिकारी बंदूक़ लेकर खड़ा था । उसी बंदूक़ से उसने बाघ पर गोली चलायी थी । पानी पर झुका हुआ बाघ थोड़ा सकपकाया, शायद उसे गोली लग चुकी थी । लेकिन उसने सीना तानकर छलाँग लगायी और शिकारी को दबोच लिया ।

बाघ को इस तरह सोता फाँदकर आते देखकर उन चारों की घिग्घी बँध गयी । घर में रटा-रटाया सूझ-बूझ का पाठ न जाने कहाँ चला गया और अब चारों को जो भी रास्ता सामने दिखायी दिया उसपर अस्त-व्यस्त-सी भाग निकलीं ।

न जाने उनमें से कौन कितनी देर तक किस दिशा में दौड़ रही थी । सबसे पहले गौतमी ने होश सँभाला । अब तो बारिश भी होने लगी थी । ऊपर आसमान बादलों से घिरा हुआ था और बारिश कब और कहाँ शुरू हुई थी इसका पता नहीं चल रहा था । लेकिन अब जब गौतमी बीच में ही रुक गयी तो उसे पता चला कि वह पूरी तरह भीग गयी है ।

उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी । सोता, पातालेश्वर की पहाड़ी, खाई कुछ भी दिखायी नहीं पड़ रहा था । चारों तरफ़ सिर्फ़ बड़े-बड़े पेड़ खड़े थे । घना जंगल था । उन पेड़ों में से उसने झाँकने की कोशिश की । कुछ भी जाना-पहचाना नज़र नहीं आ रहा था । एक सँकरी पगडंडी आगे बढ़ती ज़रूर दिखायी दी लेकिन गौतमी की अनुभवी आँखें जान गयी थीं कि वह अपना रास्ता भूलकर कहीं और आ पहुँची है ।

कहाँ थी वह तीनों ? यमू तो ख़ैर इसी इलाके की थी । देर-सवेर अपना रास्ता ढूँढ़ निकालेगी; लेकिन मीना और स्वाति तो पूरी तरह उसपर निर्भर थीं । कहाँ होंगी—वे दोनों ? कहीं उन्हें बाघ ने ...

"नहीं ... नहीं," वह ज़ोर से चीख़ पड़ी । क्षणभर के लिए उसने हाथों से अपनी आँखें बंद

कर ली। उसे ज़ोर से सिसकी आयी।

लेकिन इस तरह की प्राकृतिक आपत्ति से वह बिल्कुल अनजान भी तो नहीं थी। उसने अपने आपको सँभाला और मन-ही-मन उसने निश्चय किया कि जैसे हो उसे उन्हें ढूँढ़ निकालना ही है। इस तरह अपनी ज़िम्मेदारी निभाने की ठान लेने पर वह पेड़ों में से उनकी शाखाओं को हाथ से हटाती दौड़ने लगी।

"मीना ... स्वाति ... यमू ..." वह चिल्लाती जा रही थी। अब बारिश कुछ हल्की पड़ गयी थी। गौतमी दौड़-दौड़कर थक चुकी थी। लेकिन उसने हार न मानी। वह आगे बढ़ती रही।

"मीना ... स्वाति ... यमू ..."

"गौतमी ..." कोई चिल्लाकर महीन आवाज़ में उसे पुकार रहा था। उसने आवाज़ की तरफ़ देखा। कुछ ही दूर पेड़ों के नीचे उसे दो आकृतियाँ बैठी दिखायी दीं। उनमें से एक हाथ उठाकर उसे बुला रही थी।

"यह तो मीना ही है ..." गौतमी ने अपने आप से कहा। अब उसमें काफ़ी उत्साह का संचार हो गया था। वह भागकर उस पेड़ के नीचे पहुँच गयी। देखा कि मीना और स्वाति एक दूसरे को पकड़कर वहाँ बैठी हुई हैं। वे बुरी तरह थक चुकी थीं। गौतमी के पास आते ही वे दोनों उससे लिपट गयीं।

"यमू कहाँ है ?" मीना ने उससे पूछा।

"मुझे तो मिली नहीं। हम सब दौड़ पड़ीं और फिर कौन कहाँ गया, इसका होश ही नहीं रहा ! मैं तो तुम दोनों की चिंता में मरी जा रही थी ... अच्छा हुआ, कम-से-कम तुम दोनों तो मिल गयी !"

"गौतमी ..." स्वाति उसके गले में बाँहें डालकर रोने लगी।

"स्वाति, बहादुर बच्चे क्या इस तरह रोते हैं ? चलो, अब घर जाना है ना हम सबको ?"

गौतमी स्वाति को समझा तो रही थी, लेकिन मन में वह खुद नहीं जानती थी कि उन्हें क्या करना है ? बूँदा-बाँदी अब भी हो रही थी और कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। आसपास के पेड़ों से अंधेरा अधिक घना लग रहा था। अभी दिन डूबा नहीं था लेकिन बादलों की वज़ह से समय का अंदाज़ा लगाना मुश्किल हो गया था।

"यमू कहाँ होगी ?" मीना को फिर यमू की याद आयी।

गौतमी भी भला क्या जवाब दे ? वह गुमसुम बैठी रही। बारिश के रुकने का इंतज़ार करती वह तीनों सिहरती-कँपकँपाती पेड़ के नीचे बैठी रहीं।

आगे क्या हुआ ?

आधा-पौना घंटा बस ऐसे ही बीत गया। फिर बारिश रुक गयी, आसमान से बादल भी हट गये। कुछ-कुछ रास्ता भी नज़र आने लगा।

"मीना, चलो यहाँ से चलें !"

"लेकिन जाएँ कहाँ ?"

"मेरे बाबा हमेशा कहते हैं कि राह भूल जाओ तो जो भी राह सामने दिखायी दे उसी पर चल पड़ो। कभी-न-कभी सही रास्ता मिल ही जाता है।"

"तो फिर चलो ! अब तुम साथ हो, मुझे किसी बात का डर नहीं लगता। सिर्फ़ यह स्वाति ..."

"नहीं मीना दीदी, अब तुम और गौतमी साथ हो ना, अब मुझे भी डर नहीं लग रहा," स्वाति ने अपना ढाढ़स बाँधते हुए कह दिया।

"चलो चलें," गौतमी ने कहा और अब तीनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर जंगल से गुज़रती उस पगडंडी पर चल पड़ीं।

तीनों के कपड़े पूरी तरह से भीग चुके थे। ठंड के मारे वे बुरी तरह काँप रही थीं। गौतमी ने अपना लहँगा निचोड़कर पानी निकाल दिया था फिर भी वह उसके पैरों से चिपक रहा था। मीना का पैंट ऊनी होने से बहुत ज़्यादा भीगा हुआ नहीं था, फिर भी गीली टी-शर्ट भीगकर बदन से चिपक गई थी। स्वाति के फ्रॉक का भी वही हाल था।

लेकिन अब इन सब बातों की तरफ़ ध्यान देने का समय नहीं था। सामने जो रास्ता दिखायी दे रहा था उसे अपनाकर जैसे-तैसे जंगल से बाहर निकलना, यही अब उनका एकमेव लक्ष्य था।

सैर को निकलते वक़्त उनकी ज़बान जो पटर-पटर चल रही थी अब बिल्कुल रुक गयी थी। हवा भी रुक गयी थी। अजीब-सी ख़ामोशी छायी हुई थी। गीले पत्तों पर पैर पड़ने से रप्-

रप् आवाज़ आ रही थी। बारिश के रुक जाने पर एकाध कोई पंछी यहाँ से वहाँ उड़कर जा रहा था। बस उसके पंखों की फड़फड़ाहट ज़रूर सुनायी दे रही थी। बीच में एक कव्वा अचानक ज़ोर से चीख़ पड़ा तो वह तीनों बुरी तरह चौंक गयी।

काफ़ी समय चलने के बाद जब जंगल ख़त्म हो गया तो उन्होंने अपने आपको एक खुली सड़क पर पाया। तीनों ने थोड़ा-सा रुककर साँस ली। गौतमी इधर-उधर नज़र दौड़ा रही थी। और अचानक उसे सामने कुछ दिखायी दिया।

"मीना, देख तो सामने क्या है ?"

"कहाँ ?"

"वहाँ उस तरफ़ ! कुटिया-सी नज़र आ रही है ?"

"कुटिया ? हाँ री हाँ ! कुटिया-ही लग रही है।"

"चलो, वहीं चलकर देख लेते हैं !"

"लेकिन यह कुटिया है किसकी ?"

"किसी की भी हो ! हम वहाँ जाते हैं, थोड़ा आराम करके फिर सोचेंगे कि करना क्या है ? घर का रास्ता तो ख़ैर मिल ही जाएगा। फ़िलहाल तो पाँव दुख रहे हैं।"

"हाँ मीना दीदी, अब मुझसे एक भी क़दम आगे नहीं चला जा रहा। गौतमी ठीक कहती है, हम उसी कुटिया में ठहर जाते हैं।"

तीनों कुटिया की तरफ़ बढ़ने लगीं। कुछ देर आराम मिलने की आशा से उनके जान में जान आ गयी थी। तेज़ चलकर आगे बढ़ती गौतमी और मीना, स्वाति को भी अपने साथ घसीट रही थीं।

तीनों चलकर उस कुटिया के सामने पहुँच खड़ी हुईं। आसपास कोई हलचल नहीं थी। सिर्फ़ वही एक कुटिया। कुटिया को विश्रामधाम बनाने की सोचनेवाली गौतमी भी वहाँ ठिठक गयी। अंदर जाएँ या न जाएँ ... इस दुविधा में पड़ गयी। मीना और स्वाति उसी को देखती हुई चुपचाप खड़ी थीं।

"तुम दोनों यहीं रुको, मैं अंदर झाँककर देख तो लूँ !"

"नहीं ! मैं तुम्हें अकेली नहीं जाने दूँगी, मैं तुम्हारे साथ चलकर देखूँगी।"

"तो फिर मीना दीदी, मैं अकेली यहाँ कैसे रहूँ ?" स्वाति भुनभुनायी।

"ठीक है, तो फिर चलो। तीनों साथ-साथ चलते हैं। बोलो, एक ... दो ... तीन ..." अब गौतमी का साहस बँध गया था।

एक दूसरे का हाथ पकड़कर वह तीनों इकट्ठी कुटिया में दाख़िल हुईं। कुटिया का दरवाज़ा तो ख़ैर था ही नहीं। तीनों तरफ़ घास-फूस, मिट्टी और गोबर की बनायी दीवारें ज़रूर थीं। एक

तरफ़ से वह पूरी खुली थी। जिससे उन्होंने अंदर प्रवेश किया था।

अंदर जाकर गौतमी ने मीना और स्वाति को हाथ के इशारे से रुकने के लिए कहा, और वह कुटिया को अच्छी तरह परखने लगी। कुटिया में अंधेरा था। कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। उसकी अनुभवी नज़र ने उसे यह दिलासा दिया था कि कुटिया में और कोई नहीं था। जब वह पूरी तरह आश्वस्त हो गयी उसने मीना और स्वाति को आगे बढ़ने का इशारा किया। मीना स्वाति का हाथ थामकर आगे बढ़ी। अंदर जाते ही गौतमी धम्म से कुटिया की दीवार से सटकर नीचे बैठ गयी। स्वाति और मीना ने भी उसी का पीछा किया। अब उनमें खड़ा तक रहने की ताक़त नहीं बची थी।

एक दूजे के कंधे पर सिर रखकर कुछ देर तो वे तीनों ऐसे ही बैठी रहीं। अब बारिश रुक तो गयी थी लेकिन उनके कपड़े गीले होने की वज़ह से उन्हें बहुत ठंड लग रही थी। दाँत किटकिटा रहे थे। ठंड और तेज़ चलने-दौड़ने की वजह से पेट में चूहे दौड़ रहे थे।

"गौतमी, अब क्या करें ?"

"लगता है कि रात हमें यहीं पर गुज़ारनी पड़ेगी।"

"रात ? यहीं पर ?" मीना चिल्लायी।

"इस कुटिया में रातभर रुकेंगे ? कैसे ... ?" स्वाति रो पड़ी।

"स्वाति, रो नहीं, तुम अच्छी बच्ची हो ना ? और देखो तो बाहर रात होने लगी है ना ?"

"रात ? इतनी देर कैसे हो गयी ?"

मीना ने अंधेरे में ही कलाई पर बँधी घड़ी देखने की कोशिश की। रेडियम की वज़ह से समय तो नज़र आ रहा था। वैसे घड़ी में तो अभी सिर्फ़ चार बजे थे। मतलब साफ़ था, पानी अंदर घुसने से घड़ी कब की बंद हो चुकी थी।

"वह घड़ी तुम्हें क्या बतायेगी, मीना ? यह अंधेरा बारिश का नहीं, यह रात का अंधेरा है, और रात में जो झींगुर बोल रहे हैं ! हाँ भाई हाँ, रात हो चुकी है। अब सुबह तक इस कुटिया में ठहरे बिना कोई और चारा नहीं !"

"ठीक है। मैं नहीं डरती, यहीं पर रुक जाते हैं रातभर के लिए," गौतमी की बात में सचाई है–यह देखकर मीना को खुद के दब्बूपने पर शर्म आ रही थी।

"स्वाति, अब डर की कोई बात नहीं है यही समझ लो कि तुम स्काऊट के शिविर में यहाँ आयी हो।"

"मैं डर नहीं रही–मैं रहूँगी यहाँ।"

स्वाति ने बहादुरी जताने की असफल कोशिश की। लेकिन उसकी आवाज़ अब भी रोनी-सी आ रही थी। वैसे यह स्वाभाविक भी था, उम्र में वह सबसे छोटी जो थी। लेकिन देखा जाए

तो मीना भी उम्र में बहुत बड़ी नहीं थी। वह तो पंद्रह साल की थी लेकिन बड़ी बहन होने के नाते वह अपनी ज़िम्मेदारी बड़ी सावधानी से निभा रही थी। गौतमी उसकी हमउम्र थी और इसीलिए उसकी निडरता देखकर उसे भी साहस मिल रहा था।

गौतमी उठकर खड़ी हो गयी, और कुटिया के अंदर कुछ खोजने लगी। अंधेरे में लड़खड़ाती वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। दीवार पर से हाथ फेरते-फेरते उसे लगा कि दीवार में एक ताख बना हुआ है। उसमें कोई चीज़ रखी हुई है। वह उस चीज़ पर हाथ फेरने लगी और जल्दी ही वह भाँप गयी कि वह चीज़ एक ढनढना यानी कोई दीया है। वह मारे खुशी के चिल्ला उठी।

''मीना, इस कोने में एक ढनढना पड़ा है।''

''ढनढना ?''

''हाँ, हमारे लिए तो यह मशाल ही है, बुझी हुई। देखती हूँ, इसे जलाने के लिए कुछ मिलता है तो ...''

अब मीना भी गौतमी के पीछे-पीछे उसकी आवाज़ की दिशा में आने लगी। अचानक उसका पैर किसी चीज़ पर गिरा और कर्रर ... कर्रर ... की आवाज़ आयी। जैसे वह चीज़ उसके पैरों तले मसली जा रही हो, वह उसे चौंकाने के लिए काफ़ी था। उसके पैरों में जो छुअन थी उससे वह समझ गयी कि वह माचिस हो सकती है ...।

''गौतमी, मुझे लग रहा है कि मेरा पैर जिस चीज़ पर गिरा है वह माचिस की डिब्बी ही है,'' कहते हुए मीना ने झुककर वह चीज़ उठा ली। दो-चार तीलियाँ और बिखरी पड़ी माचिस उसने हाथ में लेकर सूँघी। उसमें बारूद की गंध थी।

''हाँ, हाँ गौतमी, यह माचिस ही है !''

''माचिस ? लगता है भगवान ने हमारी सुन ली। मुझे ढनढना मिल गया और तुम्हें माचिस। इसका मतलब यह हुआ कि अब अंधेरे से छुट्टी। मैं यह ढनढना पकड़ती हूँ–तुम माचिस जलाओ।''

मीना ने वह टूटी-बिखरी माचिस ठीक से पकड़ी और अंधेरे में ही जैसे-तैसे तीली जलायी।

फर्रर से तीली जल पड़ी लेकिन वह अचानक बुझ गयी। अब उसे काफ़ी अच्छा लग रहा था। उसने सावधानी से दूसरी तीली जलायी। उसकी रोशनी में उसे ढनढना हाथ में लिये खड़ी गौतमी साफ़ नज़र आयी। गौतमी ने उस रोशनी में टेढ़ा पकड़ा हुआ ढनढना ठीक से पकड़ा और मीना ने उसकी बाती जलायी कि बड़ी-सी लौ निकली। गौतमी ने बत्ती की आँच मद्धिम की। अब कुटिया में कुछ-कुछ नज़र आने लगा था। अब स्वाति भी उनके पीछे आ खड़ी हुई। गौतमी

ढनढना लेकर आगे चल रही थी। उसके पीछे मीना स्वाति का हाथ पकड़कर कुटिया का मुआयना करने लगी। गौतमी ढनढना चारों ओर घुमा रही थी।

"आ ..." स्वाति अचानक चिल्लायी।

"क्या हुआ ?" मीना ने चौंककर पूछा।

"वह ... वह ... वहाँ ... उस कोने में ..." स्वाति की घिग्घी बँध गयी थी।

गौतमी और मीना ने स्वाति के इशारे की तरफ़ देखा तो वे दोनों बुरी तरह चौंक गयीं। उस कोने में दो आँखें चमचमा रही थीं, और हल्दी के रंग वाला धारीदार बदन नज़र आ रहा था।

उन्हें लगा कि कुछ देर पहले देखा हुआ बाघ ही कुटिया में आ बैठा है। तीनों पलक झपकते कुटिया के बाहर आ गयीं। किसी भी वक़्त बाघ के उनपर झपट पड़ने की आशंका को देखकर वह बुरी तरह काँप उठीं। कुछ देर तक तो वह यों ही बुत बनकर खड़ी रहीं। सामने घना अंधेरा था। रात के कीड़े बोल रहे थे। सामने से दो आँखें उन्हें घूरती दिखायी दे रही थीं। गौतमी के हाथ में जो ढनढना था उसकी मद्धिम रोशनी में सब कुछ धुँधला नज़र आ रहा था।

"गौतमी ..." मीना गौतमी के कान में फुसफुसायी।

"क्या है ?" गौतमी ने भी हल्की आवाज़ में पूछा।

"मुझे शक़ हो रहा है ?"

"कैसा शक़ ?"

"हम इतनी देर तक कुटिया के अंदर थे लेकिन उस बाघ ने कोई हलचल नहीं दिखायी। वह गुर्राया तक नहीं। हम अंधकार की वज़ह से उसे देख नहीं पाये, लेकिन बाघ तो अंधेरे में भी देख सकता है। उसने हमें ज़रूर देखा होगा।"

"हाँ, बिल्कुल ! यह बात तो मेरे दिमाग़ में आयी नहीं।"

"वह मरा हुआ तो नहीं है ?" स्वाति ने कहा।

"हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है। क्या वह उस शिकारी की गोली से घायल नहीं हुआ था ? शायद उसी हालत में वह यहाँ दौड़ता आया होगा और कुटिया में पहुँचकर उसने दम तोड़ दिया होगा।"

"हो भी सकता है, मीना। शायद इसीलिए वह बेजान-सा दिखायी दे रहा है और न ही ... गुर्रा रहा है। चल, ज़रा नज़दीक जाकर देखते हैं," गौतमी ने कहा।

"नज़दीक से ? ना, ना ... अगर वह हम पर कूद पड़ा तो ?"

"अगर वह ज़िंदा है और उसे हम पर टूट पड़ना था तो वह यहाँ भी कर सकता है और वहाँ भी। वह तो वही करेगा जो वह चाहता है। हमारे यहाँ-वहाँ होने से क्या फ़र्क़ पड़ता है। और अगर हम उसे मरा हुआ पाते हैं, तो कम-से-कम चिंता से तो छुटकारा मिलेगा," यह कहकर

गौतमी ढनढना लेकर फिर से कुटिया की तरफ़ मुड़ी ।

मरण अटल है, यह जान जाने पर मरने का डर भी ख़त्म हो जाता है । मीना के साथ भी वही हुआ ।

"अच्छा, चलकर देखें," कहकर वह गौतमी के साथ अंदर मुड़ी ।

"स्वाति, तुम बाहर ही रुको," मीना ने कहा और दोनों दबे पाँव धीरे-धीरे जहाँ बाघ बैठा हुआ था, उसकी तरफ़ बढ़ने लगी ।

अब उनके और बाघ के बीच में बहुत कम फ़ासला रह गया था । इतने क़रीब होने पर भी बाघ उसी हालत में बैठा हुआ था । यह देखकर वह जान गयी कि वह ज़िन्दा नहीं था । अब सवाल यह था कि अगर वह ज़िंदा नहीं है, तो वह बैठने की मुद्रा में कैसे है ? लेटा हुआ क्यों नहीं है ?

जो भी हो, अब उनका डर ख़त्म हो गया था, इसलिए उन्होंने ज़्यादा न सोचते हुए ढनढना बाघ के क़रीब लाकर उसे देखने की कोशिश की । मीना साँस रोके और आँखें फाड़कर देख रही थी और अचानक गौतमी ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़ी ।

"गौतमी, क्या हुआ ? वह मरा हुआ है न ?"

"मरा हुआ ? यह ज़िन्दा था ही कब ? अरे मीना, यह तो पत्थर का बना हुआ बाघ है । अब मैं सब कुछ समझ गयी हूँ !"

"क्या है यह सब ?" अब मीना का डर भी कोसों दूर भाग गया था । बाघ पत्थर का है, यह सुनकर स्वाति भी अंदर आ गयी थी ।

"तभी तो मैं सोच रही थी कि इस वीराने में यह अकेली कुटिया कहाँ से आ गयी ? और यहाँ सिर्फ़ यह ढनढना और माचिस कैसे हैं ? इस बाघ ने मुझे सब कुछ बता दिया । मैंने किसी से सुना था कि यह कुटिया सुकड्या आदिवासी की है ।"

"लेकिन कोई भी आदिवासी अकेले इस तरह किसी कुटिया में रहता नहीं है । ये लोग तो अपनी अच्छी-खासी बस्ती बनाकर रहते हैं ।"

"तुम ठीक कहती हो । यहाँ उनकी भरी-पूरी बस्ती थी । लेकिन सरकार ने उन लोगों के लिए पक्के मकान बनवाकर कहीं और बसा दिया है । बाक़ी सब लोग वहाँ चले गये हैं । बस एक यह सुकड्या ही नहीं गया ।"

"क्यों ?" मीना ने अचंभित होकर पूछा ।

"उसने बताया था कि मेरे बाप-दादों के ज़माने से यह व्याघ्रेश्वर इस कुटिया में स्थापित है। इसे मैं नहीं हटाऊँगा । अगर मैं ऐसा करता हूँ तो वह उचित नहीं होगा । इसलिए सुकड्या ने कुटिया वैसी ही पड़ी रहने दी । दूसरे सभी लोग अपनी-अपनी कुटिया तोड़-फोड़कर सब सामान

ले गये। उसकी कुटिया बनी रही और उसमें यह ढनढना और माचिस भी रखी मिली। वह देखो चूल्हा और उसमें रखी सूखी लकड़ी,'' गौतमी एक कोने की ओर संकेत करती बोली।

''अरे हाँ ! यह कुटिया तो जैसे सुकड्या ने हमारे लिए ही रख छोड़ी है। लेकिन अगर वह रात को आता है और हमें कुटिया में पाता है तो क्या वह ...''

अब मीना को एक और डर लगने लगा–सुकड्या का।

''आता है तो अच्छा ही होगा। सुना है सुकड्या बहुत भला इन्सान है। रात तो बड़े आराम से गुज़र जाएगी। अगर नहीं भी आता तो हमारे सिर पर व्याघ्रेश्वर का साया तो है। हम आराम से रात कुटिया में गुज़ार सकते हैं। अब मुझे किसी चीज़ का डर नहीं लगता,'' गौतमी ने पूरे इतमीनान से कहा। अब मीना और स्वाति का डर भी ग़ायब हो चुका था।

ख़तरे के टल जाने का एहसास होने पर वे तीनों कुटिया में बैठ गयीं। लेकिन अब वे ठंड के मारे काँप रही थी। कपड़े तो गीले ही थे।

''मीना, इस ढनढने से थोड़ा-सा मिट्टी का तेल निकालकर इन लकड़ियों पर डाल दो। चूल्हा जलाकर हम आग सेंक लें। बड़ी ठंड है।''

उन्होंने कुटिया की अच्छी तरह तलाशी ली। एक कोने में कुछ सूखी लकड़ी मिली और थोड़ी-सी घास-फूँस भी, जो ऊपर से तो भीग चुकी थी लेकिन अंदर से सूखी थी। ढनढने से थोड़ा तेल डालकर उन्होंने वह लकड़ी और घास चूल्हे में सरकायी और उसे जलाया। धीरे-धीरे चूल्हा जल उठा, तीनों उसके आसपास बैठकर आँच सेंकने और कपड़े सुखाने लगीं।

बदन में थोड़ी बहुत गर्मी आने के बाद आँखों में नींद भरने लगी। लेकिन उसी के साथ-साथ भूख लगने का भी एहसास हुआ।

''मीना दीदी, बड़ी भूख लगी है,'' स्वाति भुनभुनायी।

''मीना, उस भेलपूरी के थैले में कुछ ...'' गौतमी बोलते-बोलते रुक गयी। बाघ को देखकर भागते वक़्त मीना को भेलपूरी की थैली भला कहाँ याद रहती ?

मीना को भी याद आया कि भेल-पूरी की थैली दरिया किनारे ही छूट गयी थी। उसका हाथ अचानक जेब की ओर चला गया। जेब में कोई चीज़ थी। उसकी जेब में कोई चीज़ रखी हुई थी जो उसे याद नहीं आ रही थी। उसने बाहर निकालकर देखा। अंदर ग्लूकोज के बिस्कुट वाला वह पैकेट मिला जो यहाँ आते हुए मौसी ने ज़बरदस्ती ठूँस दिया था।

''गौतमी, देख तो ! स्वाति, आ जा, भूख लगी है न तुझे ?'' मीना ने मुस्कुराते हुए कहा।

''यह कैसे मीना दीदी ?''

''यह बिस्कुट का पैकेट मौसी ने घर से चलते-चलते ज़बरन मेरी जेब में ठूँस दिया था।'' मीना के गर्म पैंट की वज़ह से और प्लास्टिक में लिपटे होने की वज़ह से बिस्कुट बारिश में सीलने

से बचे हुए थे ।''

मीना और गौतमी ने दो-दो बिस्कुट खाए और स्वाति को तीन बिस्कुट दिये । इसे खाने के बाद सबको पानी की याद आयी ।

स्वाति के कंधे से वह पानी की बोतल अब भी लटक रही थी । उसने पहाड़ी चढ़ते वक़्त उसे बार-बार फिसलने से रोकने के लिए एक पिन लगाकर अपने कंधे से बाँध रखा था । लगभग सारा पानी भेलपूरी खाने के बाद ख़त्म हो चुका था । लेकिन उसमें अब भी थोड़ा-सा पानी बचा हुआ था, जो उन्हें अब अमृत के समान लग रहा था ।

इधर प्यास तो बुझी नहीं थी उधर दोबारा बारिश शुरू हो गयी थी । मीना को एक तरकीब सूझी । सामने उसे छत से बहती बारिश के पानी की धार नज़र आयी । उसने सीधे जाकर अपनी पानी की बोतल उसके नीचे लगा दी और वह पूरी तरह भर जाने पर गौतमी से कहा, ''ज़रा वह अपना ढनढना तो दिखाना !''

''क्यों ? मैंने तो वह बुझा दिया था ...''

''दो तो सही !'' मीना ने ढनढना हाथ में लिया और चूल्हे की आग से बिस्कुट के पैकेट का काग़ज़ जलाया फिर उससे ढनढना जलाकर वह कुटिया में कुछ ढूँढ़ने लगी । जब हर तरफ़ देखकर व्याघ्रेश्वर के निकट पहुँची तो वह सहम गयी । यह पत्थर का बना है, यह जानकर भी उसे उससे डर लग रहा था–उसका अंदाज़ सही निकला, उसे वहाँ कुछ मिल गया ।

''गौतमी, यह ले कटोरा ! मुझे अपने स्काउट शिविर की याद आयी । तुमने जब कहा कि यहाँ सुकड्या रहता है तो मुझे लगा कि यहाँ एक-आध बर्तन ज़रूर होगा । ये दो-चार बिस्कुट और चुल्लूभर पानी से कुछ नहीं बननेवाला । मैंने सोचा पेट भरने के लिए कांजी पीते हैं ।''

''कांजी ? किस चीज़ की ?''

''यह ले कटोरा, काफ़ी बड़ा है । अब यह बचे-खुचे बिस्कुट मसलकर इसमें डाल दो । मैं इस पानी की बोतल से उसमें पानी डाल देती हूँ । ठीक है ? फिर कटोरा चूल्हे पर रखकर कांजी पकाते हैं ।''

कटोरा चूल्हे पर चढ़ाया गया और कांजी उबलने लगी । लकड़ी का चम्मच बनाकर उसे वे चलाते रहे और वह धीरे-धीरे गाढ़ी बन गयी । मीना ने कांजी पानी की बोतल के प्याले में डाली और स्वाति को पिलायी । भूखी और सुस्त स्वाति ने वह पलक झपकते में ख़त्म कर डाली । मीना ने गौतमी को उसका हिस्सा देकर अपना प्याला भरा लेकिन उसे मुँह लगाते-लगाते नीचे रख दिया । अब उसकी रुलाई छूट गयी ।

''मीना दीदी, क्या हुआ ?''

''यमू ... कहाँ होगी यमू ? इस वक़्त हम कांजी पीकर अपनी भूख मिटा रहे हैं, इस

कुटिया की ओट में खुद को सुरक्षित भी महसूस कर रहे हैं। लेकिन उसका क्या हुआ होगा ? वह न जाने किस मुसीबत में फँसी होगी ?''

गौतमी ने भी आँसू पोंछे। उन्हें उनकी सहेली की याद बेचैन कर रही थी। लेकिन हालात कुछ ऐसे थे कि वह उसके लिए कुछ कर नहीं सकती थीं। उसकी कमी वह बुरी तरह महसूस कर रही थीं। बाघ के नज़र आने के बाद अब तक हर तरह की कठिनाइयाँ सामने आ रही थीं और उन्हें सुलझाते हुए यमू की याद कुछ हल्की पड़ गयी थी। लेकिन अब खाने के वक़्त उसके बिना कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

गौतमी भी बेचैन हुई। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। स्वाति भी उदास हो गयी।

''मीना, हम ऐसा करते हैं कि सुबह-सुबह यमू को ढूँढ़नें निकल पड़ेंगे। उसे साथ लिये बिना घर नहीं जायेंगे।''

''और क्या ? हम चारों कैसे मज़े-मज़े मे यहाँ आ गयी थीं और अब वह नहीं है तो कितना अजीब-सा लग रहा है !''

''हाँ ! लेकिन मुझे पूरा यक़ीन है कि वह ज़रूर मिलेगी और ठीक-ठाक ही मिलेगी। हम इस व्याघ्रेश्वर की ही मनौती माँगते हैं। इस जंगल में आए संकट के लिए जंगल का देवता ही ठीक रहेगा।''

मीना को गौतमी की बात ठीक लगी। दोनों ने व्याघ्रेश्वर के हाथ जोड़े और मन-ही-मन यमू के लिए मनौती माँग ली। इससे उन्हें काफ़ी इतमीनान होने लगा। यमू मिल जाएगी और वह सुरक्षित होगी, ऐसा उन्हें यक़ीनन लगने लगा।

मन तो कुछ शांत हो गया था लेकिन पेट में चूहे दौड़ रहे थे। बची-खुची कांजी उन्होंने पी ली। मीना की माँ उसके जन्म-दिन पर मेवे-मिश्री डालकर जो खीर बनाती है, यह कांजी उससे भी कई गुना ज़्यादा स्वादिष्ट लगी। डरी-डरी आँखों से उन्हें घूरनेवाली स्वाति को बहलाने के लिए गौतमी ने कहा, ''स्वाति, अब तो भर गया न पेट ? अब थोड़ी लकड़ी तो ले आ उस कोने से,'' स्वाति को काम में लगाकर उसका ध्यान किसी और बात में लगाने के लिए ही गौतमी ने ऐसा किया था। स्वाति के मन-से भी अब तनाव धीरे-धीरे हट रहा था।

''क्यों, अब क्या पकाने का इरादा है ? या कुछ और सूझी है तुम्हें ?'' मन से उदासी हट जाने से और पेट भर जाने पर अब स्वाति भी काफ़ी उल्लसित लग रही थी।

''अब क्या पकाऊँगी, अपना सिर !''

'' तो फिर चूल्हा बुझा देते हैं। ढनढने में काफ़ी तेल है। हम वही रातभर जलता रखेंगे,'' मीना ने कहा।

''अरे भाई, इससे हमारा तो गुज़ारा हो जाएगा लेकिन बाघबघेरू आ धमके तो ?'' गौतमी

ने पूछा ।

"इस तरह डर क्यों रही हो ? इस चूल्हे को हम रात भर जलता रखेंगे । चूल्हा जलता देखकर आसपास कोई जीव-जन्तु नहीं फटकता। आग जानवरों के लिए ख़तरे की घंटी होती है।"

"अच्छा, तो यह बात है ! ठीक है, अगर हम आग में धीरे-धीरे एक-एक लकड़ी डालते जाएँ तो इतनी सूखी लकड़ियाँ रात भर के लिए काफ़ी हैं ।"

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा । तीनों एक-एक लकड़ी चूल्हे में डाल रही थीं ।

अचानक स्वाति की रुलाई सुनाई पड़ी ।

"क्या हुआ स्वाति ? ठंड लग रही है ?" मीना को लगा शायद शरीर पर गीले कपड़े होने की वज़ह से स्वाति को ठंड लग रही है ।

"स्वाति, तुम सबसे छोटी हो । यहाँ हम तीनों के बिना और कोई नहीं है । अब यह गीली फ्रॉक उतार दो । अंदर शमीज तो है ना ? और मेरे पास आ जाओ । मेरी यह चुनरी अब अच्छी तरह सूख गयी है । मेरी गोद में सिर रख दो और चुनरी ओढ़कर सो जाओ ।"

स्वाति ने ननु-नच की, लेकिन ठंड के मारे बुरा हाल था । उस वक़्त उसे गौतमी अपनी माँ-सी लगी । उसने अपनी फ्रॉक उतार दी और वह सीधी जाकर गौतमी की गोद में सो गयी ।

एक-एक लकड़ी की आहुति चूल्हे की आग को ज़िन्दा रख रही थी । गौतमी उसकी गोद में दुबककर सोयी स्वाति को हल्की-हल्की थपकियाँ देकर सुला रही थी । मीना ने भी गौतमी के कंधेपर अपना सिर रख दिया था । स्वाति तो गहरी नींद सो गयी लेकिन यमू की चिंता से गौतमी और मीना सो नहीं पा रही थीं । रातभर चूल्हा भी जलाए रखना था । सुरक्षा का कोई भरोसा नहीं था । लंबी-चौड़ी रात आगे पड़ी थी और सोना दुश्वार था । जागते रहने के लिए बातें तक करने की ताक़त तक अब उनमें बची नहीं थी । मौन रहकर एक-एक लकड़ी चूल्हे में सरकाती मीना और गौतमी चूल्हे की पीली आग को निहारती बैठी रहीं ।

कुएँ से आवाज़

चूल्हे की आग को जलाये रखने की ठानकर गौतमी और मीना उसमें लकड़ियों का ईंधन डालती जा रही थीं। जागती, ऊँघती चुपचाप रात गुज़ार रही थीं। चारों तरफ़ शान्ति थी। आसपास किसी ज़िन्दा प्राणी के होने की कोई निशानी नहीं थी। बारिश रुक गयी थी। रात के कीड़े भी शायद थककर सो गये थे। मन की गहराइयों में उतरता सन्नाटा। बीच में अचानक कहीं से हवा का कोई झोंका आता और खुली कुटिया में सीधा घुसकर उन दोनों पर आ धमकता। चूल्हे की आग उससे धधक उठती। वे दोनों चौंक जातीं। इतने में हवा की एक और लहर पेड़ों से सरसराती आगे गुज़रती। उस लहर की वज़ह से कुछ ऐसी विचित्र आवाज़ आती कि उस सन्नाटे की भयावहता और भी घनी हो जाती थी। कुटिया में आराम ज़रूर था लेकिन एक अजीब क़िस्म का डरावना तनाव जैसे उनके साहस को लील जाना चाहता था। और अचानक, एक अजीब-सी आवाज़ सुनायी दी। पैरों की आहट ... दौड़ते हुए पास आते क़दम।

आवाज़ दूर से आ रही थी। लेकिन उसकी बढ़ती रफ़्तार और दिशा उसके कुटिया के क़रीब आने का संकेत दे रही थी।

मीना ने झटके से गौतमी का हाथ पकड़ा और वह धीरे-से बुदबुदायी–

"गौतमी, कौन होगा ?"

"क्या पता !" गौतमी ने भी दबी-दबी आवाज़ में जवाब दिया। आवाज़ और भी क़रीब आने लगी।

"कहीं यह सुकड्या तो नहीं है ? वह तो यहाँ किसी भी वक़्त आ सकता है।"

"हाँ, आता होगा। लेकिन अगर वह उसकी अपनी कुटिया में लौट रहा है तो वह चलकर ही तो आएगा ! यह तो कोई ऐसे दौड़ रहा है जैसे बाघ पीछे पड़ गया हो ..."

"बाघ ?"

"अरे भाई, वह तो मैंने उसके तेज़ी से दौड़ने के बारे में कहा था। लेकिन लगता है कि

वह सुकड़्या नहीं है ।''

थोड़ी देर के लिए वह दोनों ख़ामोश बैठी रहीं । अब कुटिया के पीछे से क़दमों की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी ।

''गौतमी ?''

''क्या ?''

''कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई हमें ढूँढ़ने आ रहा है ?''

''हाँ ... लेकिन ...''

''लेकिन क्या ?''

''नहीं, यह हमें ढूँढ़ने नहीं आया । क्योंकि यह तो किसी एक के पैरों की आहट है।''

''हाँ, सच ! अगर हमें ढूँढ़ने कोई आता है तो वह अकेला तो नहीं आएगा और वह भी इस तरह दौड़ते हुए ?''

''और इस तरह अंधेरे में थोड़े ही कोई आएगा ? जो भी आएगा टॉर्च या मशाल लेकर आएगा ... आवाज़ लगाएगा । इस तरह चुपचाप दौड़ते हुए कोई आएगा भला ?''

''हाँ, तुम ठीक कहती हो । कहीं कोई बा ... बा ...''

मीना को बाघ का नाम तक लेने में हिचक हो रही थी ।

''अरे बाघ के क़दमों की भी कोई आवाज़ आती है ? यह तो कोई हमारे जैसा ही होगा भूला-भटका ... । मीना, कहीं यह यमू तो नहीं ?''

''लेकिन आवाज़ तो कुटिया के पीछे से आ रही है ना ?''

उन्होंने कान लगाकर आहट को पहचानने की कोशिश की । आवाज़ तो कुटिया के पीछे से ही आ रही थी ।

''गौतमी, अगर यह यमू होती तो वह कुटिया में रोशनी देखकर सामने से आ जाती ।''

''मुझे तो यही लगता है कि यमू यहाँ ज़रूर जाएगी । देख, अब वह आवाज़ और भी पास आ गयी है । या फिर यह कोई आदमी नहीं जानवर होगा ।''

''आदमी नहीं ... ? कैसा जानवर ?''

''सुनो अगर जंगल में भालू दौड़ता है तो उसकी आवाज़ भी बिल्कुल आदमी के दौड़ने जैसी आती है ।''

''भालू ? गौतमी, अगर यह भालू है और वह खुली कुटिया से एकदम अंदर घुस आता है तो हम क्या करेंगे ?''

''डरो मत ! भालू तो आग के आसपास भूलकर भी नहीं फटकता । हम चुपचाप बैठकर देखेंगे कि क्या होता है ?''

खुसुर-पुसुर बंद हुई, दोनों ध्यान देकर सुनने लगीं और अचानक कोई आवाज़ सुनायी पड़ी ... धड़ाम् ।

"धप् ..." गले में जैसे कुछ अटक गया ।

"गौतमी, यह किसी के कहीं गिरने की आवाज़ है ।"

"हाँ, ज़रूर कोई नीचे गिरा है, ज़मीन पर नहीं, पानी में गिरा है । यह आवाज़ किसी के पानी में गिरने की है ।"

"पानी ? कैसा पानी ? गिरने के लिए इतना पानी है ही कहाँ ?"

"नहीं, मेरे कान मुझे धोखा नहीं दे सकते । मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ कि यह पानी में ही गिरने की आवाज़ है । हो सकता है कि पीछे के बाड़े में कोई कुआँ हो । शायद वहाँ कोई दौड़ता हुआ आया और अंधेरे में दिखायी न देने से कुएँ में गिर पड़ा ।"

"गौतमी, अगर यह यमू है और वह कुएँ में गिर पड़ी हो ... तो ?"

"अगर यह यमू होती तो कुएँ में गिरते वक़्त ज़रूर चिल्लाती । लेकिन हाँ, कोई आवाज़ सुनायी तो पड़ी थी ।" गौतमी ने वह दबी-दबी-सी आवाज़ याद करने की कोशिश की ।

"वह सहमी-सहमी-सी आवाज़ तो मैंने भी सुनी थी । लेकिन वह किसी आदमी के चिल्लाने की आवाज़ नहीं थी । फिर भी अगर वह यमू हो तो ..."

"मीना, यमू तो मेरी भी प्यारी सहेली हैं लेकिन इस वक़्त हम दोनों तो बाहर निकल नहीं सकतीं ! कोई कुआँ है भी या नहीं है–इसका भी इस वक़्त पता नहीं चल सकता । हम ढूँढ़े भी तो कहाँ और कैसे ?" उन दोनों को ऐसा लग तो रहा था कि वह यमू है लेकिन निश्चित रूप से कुछ भी कहा नहीं जा सकता था । वहाँ बैठे-बैठे अंदाज़ लगाने के अलावा वह कुछ कर भी तो नहीं सकती थीं । वह दोनों यंत्र की तरह चूल्हे में लकड़ी डालती रहीं । कभी चुप न रहनेवाली ये दो सहेलियाँ अब मानों मुँह में ताला लगाकर बैठी थीं । खेल-खेल में यह क्या से क्या हो गया था ? साहसपूर्ण सैर अच्छा-ख़ासा मज़ाक़ बन चुकी थी ।

जागने का भरसक प्रयास करने के बावजूद उन दोनों की आँखों में नींद भरने लगी थी । एक दूसरे से लिपटकर वह कब निद्रा के अधीन हो गयी–इसका पता ही न चला ।

सबसे पहले गौतमी की आँख खुली । बारिश रुक गयी थी । पौ फट रही थी । पेड़ों पर इक्का-दुक्का कोई पखेरू चहकने लगा था । चारों तरफ़ अब भी झुटपुटी रोशनी फैली हुई थी । गौतमी ने अपने कंधे पर से मीना का सिर हल्के से हटाकर दीवार से लगा दिया । और वह उठ खड़ी हुई। उसका यह अंदाज़ था कि रात में कोई पीछे के कुएँ में गिरा है लेकिन निश्चित रूप से कुछ भी मालूम नहीं था । फिर भी, "वह यमू तो नहीं होगी ?"–मीना का यह संदेह उसे बेचैन कर रहा था ।

उसे लगा कि वह बाहर जाकर एक बार देख ले लेकिन अब उसका साहस भी डिगने लगा था। रात तो अच्छी तरह बीत गयी। अब किसी नयी मुसीबत को क्यों न्योता दें, जैसा विचार भी शायद उसके मन में छाता जा रहा था।

कुटिया की ओट से कल जिस तरफ़ से आवाज़ आयी थी–उसने उस तरफ़ देखने की कोशिश की लेकिन वह एकदम से चीख़ पड़ी। उसके चीख़ने पर मीना और स्वाति हड़बड़ाकर जाग गयीं और गौतमी के साथ खड़ी होकर देखने लगीं। उस मद्धिम रोशनी में कुटिया के पीछे पंद्रह-बीस फीट की दूरी पर, कोई चार पैरों पर चलती हुई चीज़ दिखायी दी। बीच-बीच में वह लंगड़ाती-सी नज़र आ रही थी। कभी वह घुटनों के बल चलनेवाले छोटे-से शिशु की तरह नज़र आती तो कभी वह लड़खड़ाकर बीच में ही गिर पड़ती। लेकिन वह है क्या चीज़–यह अब भी पता चल नहीं रहा था। साँस रोककर कुटिया की ओट से वह उसे देख रही थी।

और अचानक वह आकृति दो पाँवों पर खड़ी हो गयी–मनुष्य की तरह। अब वह इतना तो जान गयी कि यह कोई जानवर नहीं, आदमी था। गौतमी ने कहा–

"मीना, लगता है कोई आदमी ही है!"

"हाँ! चलो बाहर चलकर देखें।"

तीनों कुटिया से बाहर निकली। धुँधलके में अभी कुछ साफ़ नज़र नहीं आ रहा था। बारिश के रुकने के बाद भी बिजलियाँ चमक ही रही थीं। तभी बिजली कौंध पड़ी और स्वाति चिल्लायी, "यमू ..."

अब गौतमी और मीना ने भी उसे पहचान लिया था। वह तीनों यमू की तरफ़ दौड़ पड़ीं।

यमू उनकी तरफ़ आते-आते नीचे बैठ गयी। वह तीनों उसे पुकारती हुई उसके पास जा रही थीं।

तीनों मिलकर उसे कुटिया में ले आयी और ज़मीन पर लिटा दिया। मीना, गौतमी की आँख लग जाने पर चूल्हा भी ठंडा पड़ चुका था। ढनढने से बचा-खुचा तेल लकड़ी पर डालकर गौतमी ने चूल्हा जलाया। स्वाति ने एक-एक कर उसमें लकड़ी डाली। स्वाति की उतारी गीली फ्रॉक अब सूख चुकी थी। उसे आग पर गरम करके मीना यमू के हाथ-पाँव सेंकने लगी। धीरे-धीरे यमू को होश आने लगा। उसकी जान में जान आने लगी। उसने धीरे-से आँखें खोलीं। आँखें खोलने पर उसे सेंक देती हुई मीना दिखाई दी, वह 'मीना' कहकर उससे लिपट गयी।

मीना की आँखों से झर-झर आँसू बह निकले। स्वाति का भी रोना निकल गया। यमू की नज़र चारों ओर घूम रही थी।

"मीना ... तुम दोनों यहाँ हो और गौतमी ... गौतमी कहाँ है?"

मीना ने देखा कि गौतमी चूल्हे के पास से हट गयी थी। वह कब उठकर वहाँ से चली गयी

थी, इसका मीना को पता नहीं चला था ।

अब दिन निकल चुका था । स्वाति का डर भी ग़ायब हो गया था । वह गौतमी को ढूँढ़ने बाहर निकली ।

कुटिया की पीछे की तरफ़ गौतमी ज़मीन से कुछ उखाड़कर निकाल रही थी । स्वाति उसके पास गयी ।

"यह क्या है गौतमी ?"

"आर्बी, आदिवासी अपनी झुग्गियों के आसपास आर्बी ज़रूर लगाते हैं–यह बात मैं जानती थी । इसीलिए यहाँ देखने चली आयी ।"

"क्या करोगी इनका ?"

"बताती हूँ–चलो ।"

कुटिया में जाकर गौतमी ने बारिश के पानी से आर्बी को साफ़ धो लिया । उसके बाद एक पत्थर से उन्हें खूब अच्छी तरह मसला । फिर कांजी का कटोरा लेकर उसमें पानी डाला और वह आर्बी भी उसी में डालकर वह कटोरा उसने चूल्हे पर चढ़ा दिया ।

"यह हमारी यमू का खाना है । उसे भूख लगी होगी न ?"

"सच ! बहुत भूख लगी है ।" थकी-थकी आवाज़ में यमू ने जवाब दिया ।

"अरे यमू, लेकिन इस वक़्त तुम अचानक इस तरह कैसे आई ?"

"कुएँ से निकलकर ।"

"कुएँ से ? वही कुआँ, जो कुटिया के पीछे है ?"

"हाँ ।"

"यानी कल रात ..."

मीना को कल की रात की बात याद आयी ।

"उस कुएँ में तुम कूद पड़ी थी ? वह भला क्यों ?"

"कूद पड़ी थी ? अरे, मैं भला क्यों कूदती ? मैं तो ग़लती से कुएँ में जा गिरी थी !"

"यमू ? तुम कुएँ में गिर पड़ी लेकिन डूबी नहीं ?" स्वाति ने भोलेपन से आश्चर्य जताते हुए पूछा ।

"क्या मैं तैरना नहीं जानती ? अच्छा तो सुनो, हुआ यह कि ..."

"रुको, पहले आर्बी खा लो, फिर बताना ।"

बदन सेंकने के बाद अब ज़्यादा ठंड तो लग नहीं रही थी । सहेलियाँ मिल गयी थीं और पेट में आर्बी की कांजी चली गयी थी । अब यमू को काफ़ी अच्छा लग रहा था ।

"उस बाघ को देखकर हम दौड़ पड़ी थीं ना ... उसके बाद मैं दौड़ती-दौड़ती काफ़ी आगे

निकल गयी । मुझे लगा था बाघ ने मुझे सामने से देखा है । वह ज़रूर मेरा पीछा करेगा, इसलिए मैंने तुम लोगों की तरफ़ देखा नहीं । बस तेज़ी से भागती गयी ... । बारिश में भीगती, जंगल से रास्ता बनाकर भागती रही ।''

''तो फिर हमें नज़र क्यों नहीं आयी ?'' मीना ने पूछा ।

''मुझे लगता है, मैं तुम लोगों की उलटी दिशा में दौड़ रही थी । काफ़ी देर तक दौड़कर दूर निकल आने के बाद, मुझे जंगल में अचानक एक मंदिर नज़र आया । मैं अंदर जाकर पूजाघर में जा बैठी । काफ़ी देर तक चुपचाप बैठी रही । जब देखा कि अब बाघ आगे-पीछे कहीं दिखायी नहीं दे रहा तब कहीं मेरी जान में जान आ गयी । सोचा, मंदिर से बाहर निकलकर ज़रा देखूँ तो सही कि मैं कहाँ आ गयी हूँ । वैसे भी उस वक़्त अंधेरा छाने लगा था और मैं तुम सबको बहुत याद कर रही थी । तुम लोग भी दौड़ती-भागती यहीं कहीं आयी होगी तो मिलोगी–यह सोचकर पूजाघर से निकली ही थी कि ... ओ माँ ...!''

उस घटना को याद करते हुए भी यमू के रोंगटे खड़े हो गये थे ।

''क्या हुआ यमू ?'' स्वाति ने डरकर पूछा ।

''मैं पूजाघर से निकल ही रही थी मैंने देखा तीन लंबे-चौड़े काले-कलूटे आदमी मंदिर के बाहर खड़े थे । कहानियों में हम जिन चोर-डाकुओं के बारे में पढ़ते हैं ना, वे लोग ठीक वैसे ही नज़र आ रहे थे । मैं पूजाघर के अंधेरे कोने में छुपकर बैठ गयी । कलेजा धक्-धक् कर रहा था। लेकिन जहाँ मैं छिपकर बैठी थी, वहाँ काफ़ी अंधेरा था । मैं डर रही थी कि कहीं वह भगवान का दर्शन करने आते हैं और दीया जलाने पर मुझे यहाँ इस तरह पाते हैं तो ...''

गौतमी, स्वाति और मीना सारी बात बड़े ध्यान से सुन रही थीं, मानों वह सब अभी इस वक़्त उनके आँखों के सामने हो रहा हो ।

''माँ री ! फिर ?'' गौतमी ने पूछा ।

''फिर क्या ? मैं मन-ही-मन भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि हे भगवान, उन्हें कहीं इधर आने की बुद्धि न देना और भगवान ने जैसे मेरी सुन ली । तीनों बाहर ही बैठे रहे । उन्होंने मशाल जलायी थी इसलिए उनके चेहरे मुझे साफ़ नज़र आ रहे थे । मेरे अंदर होने का पता उन्हें नहीं चला । मशाल की रोशनी में उनके काले-कलूटे भयानक चेहरे ... माथे पर रोली टीका ... बाँहों पर सफ़ेद तावीज़ बँधे हुए ... कमर में चमकती तलवारें और एक के पास कुल्हाड़ी । मशाल की रोशनी में वे तीखे और धारदार हथियार झिलमिला रहे थे । वे तीनों रात में कहीं डाका डालनेवाले थे और इसके बाद इसी मंदिर में ठहरनेवाले थे ।''

वह सब याद करते हुए यमू सिहर उठी । तभी उसकी छींक निकल गयीं ... ''फटाक् ... फटाक् ...''

"मैंने अपनी छींकें तक रोक रखी थीं। बारिश में बुरी तरह भीगने से बड़े ज़ोर की छींकें आ रही थीं। दम घुट रहा था लेकिन फिर भी मैंने नाक बंद रखी। मुँह से साँस लेती रही। कुछ देर बाद कौन, कब और कैसे जाएगा, आदि सब तय कर वह वहाँ से चल दिये। मैंने उन्हें मंदिर से दूर जाते हुए जाते हुए देखा और फिर मैं उनकी उल्टी दिशा में भाग निकली ..."

यमू कल रातवाला क़िस्सा बखान करती जा रही थी और बाक़ी तीनों जैसे उस घटना को फिर से महसूस कर कर रही थीं।

"बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। ख़ैर, मैं वैसे ही दौड़ती रही। कुछ देर बाद बारिश रुक गयी। लेकिन चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। यह अंधेरा रात की वज़ह से है या बादलों की वज़ह से–इसका पता नहीं चल रहा था। मैं तो बस भागती रही और इस तरह भागती-भागती न जाने कितनी दूर आ गयी, इसका पता ही नहीं चला! पैर थक चुके थे। यूँ ही दौड़ते-दौड़ते मुझे दूर कहीं आग जलती हुई दिखायी दी।"

"अरे वह तो हमने ही चूल्हा जला रखा था। उसे देखकर यहीं आ जाती तो ..." मीना ने कहा।

"हाँ, वह देखकर एक बार मुझे भी लगा कि यह कोई कुटिया है और अंदर आग भी जली हुई है। चलूँ, चलकर देख तो लूँ! लेकिन फिर लगा कहीं इस कुटिया में उन्हीं चोरों के संगी-साथी हों तो आफ़त मोल लेनेवाली बात हो जायेगी। इसलिए मैं बस दौड़ती भागती रही। रात के घने अंधेरे में मुझे कुआँ दिखायी नहीं पड़ा। मैं सीधी उसी में जा गिरी।"

"तुम्हें डर नहीं लगा?"

"रातभर कुएँ में कैसे रह पायी?"

"तैरते-तैरते थक नहीं गयी? सारी रात तैरते रहना भी कोई मज़ाक़ है?"

"मैं रात रातभर पानी में रही कहाँ?" अब दिमाग़ से तनाव हट जाने पर यमू थोड़ी सँभल गयी थी।

"यानी तुम रात में ही कुएँ से बाहर निकल आयी?"

"नहीं, नहीं! रात तो मैंने कुएँ में ही गुज़ारी लेकिन पानी में नहीं।"

"मतलब? तुम तो पहेलियाँ बुझाने लगी? क्या कुआँ सूखा पड़ा था?"

"नहीं, कुएँ में पानी था और मैं पानी में ही गिरी थी। लेकिन हुआ यह कि उसमें गिरने के बाद, कुछ देर तो मैं कुछ सोच ही नहीं पायी। मैं पानी में नीचे जाने लगी। लेकिन जैसे ही नाक-मुँह में पानी भरने लगा तो मेरे होश ठिकाने आ गये। वैसे कुएँ में तैरने की मेरी शुरू से आदत है। इसलिए हाथ-पैर मारकर किनारे लग गयी। भाग-भागकर जान वैसे ही सूख गयी थी। भीगने की वज़ह से ठंड भी लग रही थी। इस तरह तो बहुत देर तैरते रहना संभव नहीं है, यह

मैं जान गयी । फिर मैं कुएँ के चारों तरफ़ कोई ईंट या पत्थर ढूँढ़ने लगी, कहीं कोई टिकने की जगह मिले तो वहाँ रात गुज़ार लूँ ।"

"कुएँ में ईंट-पत्थर ?" स्वाति को आश्चर्य हुआ ।

"हाँ, इस तरह के कुएँ में कई बार पत्थर होते हैं, यह मैं जानती थी । हमारे खेत में जो कुआँ है, उसमें भी हैं । मेरी मेहनत सफल हुई । मुझे एक बड़ा-सा पत्थर हाथ लगा, जो काफ़ी बड़ा था और पानी के ऊपर भी । मैंने ज़ोर लगाया और उसपर चढ़ने में सफल हुई । फिर मैं उसपर पालथी मार कर जैसे-तैसे बैठ गयी ।"

"लेकिन तैरते-तैरते तुमने यह सब कैसे कर लिया ?" मीना ने उसकी तारीफ़ करते हुए हैरानी से पूछा ।

"वह कोई बड़ी बात नहीं है । बचपन में कुएँ में तैरते हुए हम कई खेल खेलते थे इसलिए उसकी तो मैं आदी हूँ । तो इस तरह मैंने पूरी रात उस पत्थर पर बैठे-बैठे गुज़ारी और पौ फटते ही कुएँ की दीवार को पकड़-पकड़ कर ऊपर चढ़ी और बाहर निकलकर यहाँ आ गयी । वैसे वह कुआँ बहुत गहरा नहीं था ।"

"बहुत गहरा नहीं था ? हे भगवान, तुम्हारी जगह अगर मैं इस तरह गिरी होती, तो गिरते ही मर जाती," स्वाति ने कहा ।

"मैं चढ़कर ऊपर तो आ गयी लेकिन उसके बाद तो जैसे मेरी सारी ताक़त ही चुक गयी । दो क़दम भी आगे बढ़ना मुश्किल हो गया था इसीलिए मैं घुटने के बल चल रही थी ।

"और फिर बीच में ही तुम अपने पैरों पर खड़ी हो गयी और हमें मिल गयी," मीना ने कहा।

"सच ! तुम लोगों को देखा और जैसे मरकर भी मैं फिर से ज़िन्दा हो गयी ।" अब तो यमू की आँखों से भी आँसू बह निकले ।

अब चारों की चारों एकदम शांत और ख़ामोश बैठी हुई थीं । कल और आज की शांति और ख़ामोशी में ज़मीन-आसमान का अन्तर था ।

फिर डाकू ?

अब काफ़ी उजाला हो चुका था। पंछी चहकने लगे थे बारिश रुक गयी थी। बादल भी छँट गये थे। गुनगुनी धूप चारों तरफ़ फैल रही थी जो मन को प्रसन्न कर रही थी।

"मीना, अब यमू मिल गयी है। चलो, अब घर का रास्ता ढूँढ़ते हैं। यहीं बातों में उलझ गये तो यहीं फिर रात हो जाएगी ..."

"जब गौतमी के मुँह से "आज की रात भी यहीं पर ..." सुनकर तो मीना झट से उठ खड़ी हुई। यमू को सेंकने के बाद अब स्वाति की फ्रॉक सूख गयी थी। वह उसने उसे पहना दी। ढनढना, टूटी-बिखरी माचिस और बची-खुची तीलियाँ सहेजकर ताख में रख दी गईं। गौतमी ने चूल्हा बुझा दिया। लकड़ी सहेजकर रख दी और फिर वह व्याघ्रेश्वर के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। उसे देखकर मीना भी उसके पास हाथ जोड़कर खड़ी हुई।

"हे व्याघ्रेश्वर, तुमने हमारी सुन ली। तुम्हारा यह ऋण हम कैसे उतारें ?"

"सच पातालेश्वर, यह तो आप ही की कृपा है कि हम लोग बाल-बाल बच गये," मीना ने कहा।

"यह तुम लोग क्या कह रहे हो ?" यमू ने पूछा।

"और तुम इस कुटिया में कैसे आयी ? क्या रातभर यहीं पर थीं तुम लोग ?"

"देखो यमू, सबसे पहले तो हम अपना रास्ता ढूँढ़ते है। तुम्हें यह सारी रामकहानी चलते-चलते बतायेंगे। चलो, चलें," गौतमी ने आग्रहपूर्वक कहा।

वे चारों कुटिया से निकलीं। यमू के कहने पर उन्होंने मंदिर की तरफ़ वाली सड़क की दिशा छोड़ दी। सामने एक सड़क दीख रही थी, जो थी तो अनजानी लेकिन इन अनजानी राहों में से ही उन्हें किसी एक का चुनाव करना था। उन्होंने अंदाज़ से एक दिशा चुनी और वह उस दिशा में चल पड़ीं।

कुनकुनी धूप पेड़ों के पत्तों से निकलने की कोशिश में लगी थी। बारिश नहीं थी। बादल

भी नहीं थे । मंद-मंद हवा चल रही थी अब संकट भरा तनाव मन से हट गया था । पूरा दिन सामने पड़ा था और शीघ्र ही हम अपना रास्ता ढूँढ़ लेंगे, यह विश्वास उनमें जाग गया था । थकान का कहीं नामोनिशान नहीं था । हमेशा की तरह खूब बातें हो रही थीं । क़दम तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे । बाघ को देखकर यमू के भागने और फिर उससे मिलने तक जो भी हुआ था, वह उन तीनों ने उसे बारी-बारी सुना दिया ।

वह काफ़ी देर तक चलती रहीं । जंगल छितरा हुआ लगने लगा था लेकिन अब किसी प्राणी की कोई आहट नहीं सुन पड़ रही थी । राह में उनसे कोई मिला भी नहीं था ।

"कितनी दूर तक फैला होगा अब और यह अछोर जंगल ?" मीना ने चलते-चलते रुककर पूछा ।

"क्या पता, लेकिन अब पेड़ दूर-दूर नज़र आ रहे हैं और सड़क भी चौड़ी होती जा रही है, इसलिए बहुत दूर तो नहीं होगा ...," यमू ने कहा ।

"अरे वह देखो, उस तरफ़ बायें हाथ पर बड़ी सड़क नज़र आ रही है । चलो वहीं से," गौतमी को बड़ी सड़क दिखायी दी ।

अब सब उत्साहित हुईं । स्वाति कोई गाना गुनगुनाने लगी । जब तक बस्ती नज़र नहीं आती तब तक ख़तरा बना हुआ है, यह वह जानती थी । इसलिए वे तीनों ही पूरी सावधानी से चल रही थीं ।

कुछ और समय बीत गया । फिर अचानक चलते-चलते रुककर वह चौकन्ना होकर सुनने लगी ।

"गौतमी, तुम्हें कुछ सुनाई दे रहा है ? कोई आवाज़ ?" मीना फुसफुसायी ।

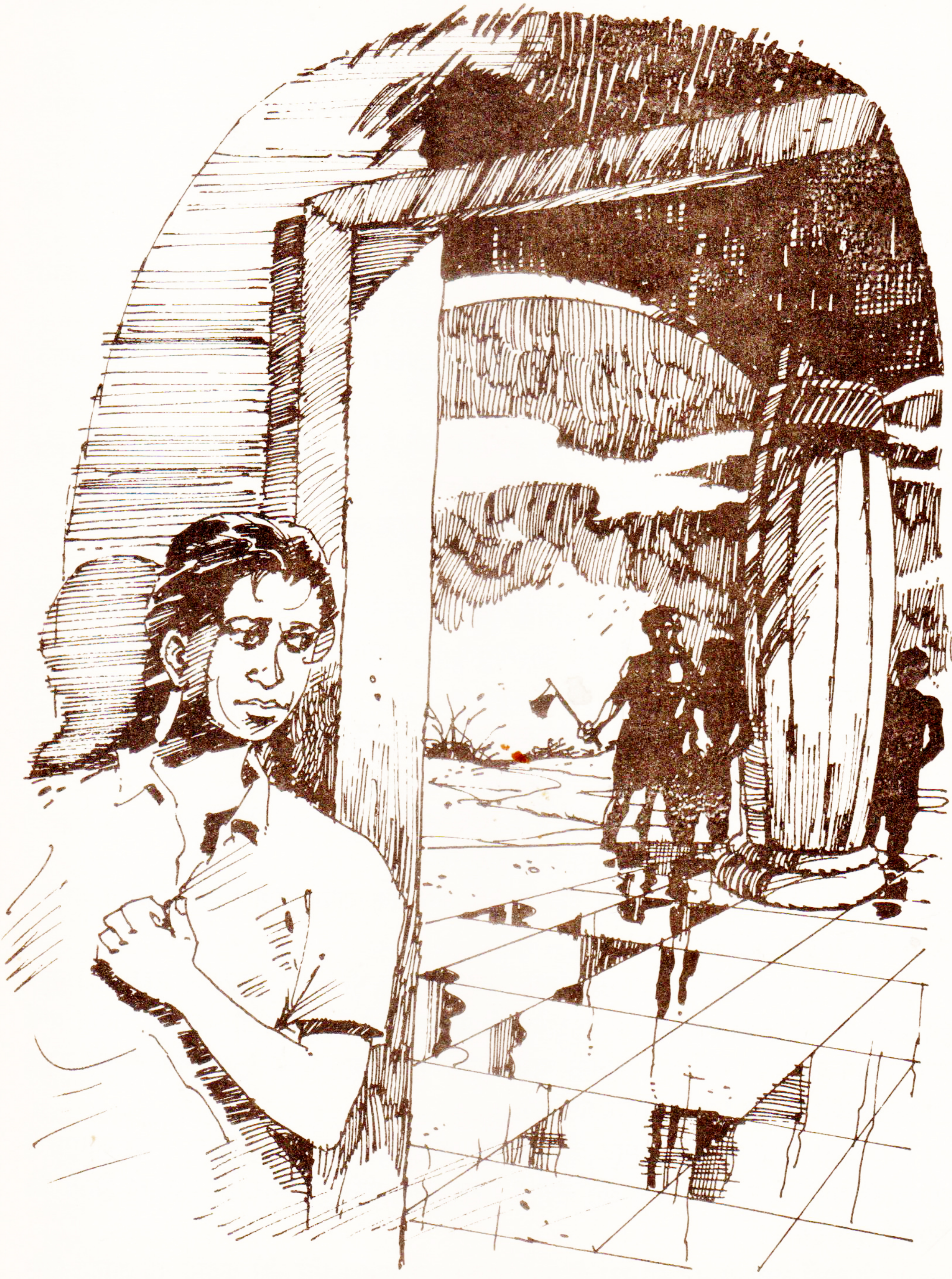
"हाँ ! किसी के क़दमों की आहट-सी लग रही है ।"

"कहीं वे डाकू तो नहीं होंगे फिर-से ?" अब तक अपने साहस का जोशीला बखान करनेवाली यमू ने चौंककर पूछा ।

कुछ देर तक अनिश्चितता छायी रही । आवाज़ अब भी काफ़ी दूर से आ रही थी । कुछ तो करना ही था । बड़ी सड़क तक पहुँचानेवाली पगडंडी वैसे बहुत दूर तो नहीं थी लेकिन वहाँ तक पहुँचने का समय नहीं था । गौतमी चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रही थी । अचानक उसकी नज़र तीन-चार छोटे लेकिन घने पौधों पर पड़ गयी ।

"चलो पौधों के उस झुरमुट के पीछे छुप जाते हैं । बाद में जो होगा, देखा जाएगा । पासवाली झाड़ियाँ काफ़ी ऊँची हैं और घनी हैं । हम उसके पीछे दुबककर बैठ जाएँ तो किसी को दिखाई नहीं देंगे ।"

वे चारों तेज़ी से उन झुरमुटों के पीछे जाकर छुप गयीं । धीरे-धीरे क़दमों की आहट पास



आने लगी और फिर बातों की फुसफुसाहट भी सुनाई देने लगी। हल्की आवाज़ में कोई एक आदमी दूसरे को कुछ समझा रहा था।

अब वह आहट बहुत क़रीब उन पेड़ों के पास आ चुकी थी। वे लोग यह सोचकर निश्चिंतता से चल रहे थे कि उन्हें इस जंगल में कोई देखनेवाला नहीं है। उन लड़कियों की मौजूदगी के बारे में तो वह सोच भी नहीं सकते थे। लेकिन पेड़ों के पीछे से देखते हुए ये चारों लड़कियाँ यह समझ गयी थीं कि वे लोग कौन थे ? यमू ने डर कर गौतमी का हाथ थाम लिया। उसने उन्हें पहचान लिया था। कोई और होता तो उसे लगता कि ये देहाती लोग जंगल में लकड़ी लेने जा रहे हैं। लेकिन कल ही यमू ने उन्हें उनके असली रूप में देखा था।

"हाँ हाँ ... वही ... सुकड्या ... यह पोटली ... कुआँ, कल फिर ... सुकड्या ... मेले में ... दो दिन नहीं ... उसका कुआँ ... शक़ नहीं ... ध्यान रखना ... दोनों पोटलियाँ ... कल हम जायेंगे ... समझ गये ... काम ठीक से ... ।"

"हाँ हाँ ... ! सब समझ गया। अब तुम जाओ। अपना काम करने और मेरा काम इतमीनान से मुझपर छोड़ दो।"

इसी तरह कुछ-न-कुछ आपस में बोलते-बतियाते हुए वे लोग वहाँ से निकल गये। लड़कियों को सब कुछ साफ़ नज़र आ रहा था। खुद को उन डाकुओं से बचाने के लिए वह साँस रोककर शांत खड़ी थी। कुछ देर में वे लोग काफ़ी दूर चले गये। उनमें से दो आगे बढ़ गये और एक उसी पगडंडी से सुकड्या की कुटिया की तरफ़ मुड़ गया।

इधर, ख़तरा टलने पर ये चारों अपनी छुपने की जगह से निकलकर बाहर आ गयीं। वह तेज़ी से आगे बढ़ना चाहती थीं लेकिन मन पर छायी आशंका से इनकी गति अनायास ही धीमी पड़ गयी थी।

"लगता है, मुसीबतों ने अब भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा है," गौतमी ने कहा।

"और क्या ! घर वापस लौटने तक और न जाने किस-किस से पाला पड़नेवाला है !" मीना ने कहा और फिर गौतमी से पूछा, "लेकिन तुम्हें यक़ीन है कि यही हमारे घर की सड़क है और हम सही दिशा में आगे बढ़ रह हैं ?" अब उसे फ़िक्र होने लगा था।

"सड़क यही है। ये डाकू गाँव की तरफ़ से ही आ रहे होंगे। ज़रूर कोई गाँव पास ही में है। अगर वह हमारा गाँव नहीं भी है तो वहाँ जाकर पंचायत-पुलिस थाने से हम मदद माँग कर अपने घर पहुँच सकते हैं," गौतमी ने उसका साहस बढ़ाने की कोशिश की।

उधर यमू न जाने क्या सोच रही थी वह बोली, "गौतमी ... तुमने सुना नहीं, वे क्या कह रहे थे ?" उसने पूछा।

"सुना तो सही लेकिन पल्ले कुछ नहीं पड़ा। सुकड्या और कुआँ ... बस यही दो शब्द

समझ में आए ।''

''क्या इसका मतलब यह है कि सुकड्या भी इन्हीं का आदमी है ?'' मीना ने हैरानी से पूछा ।

''नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता । मेरा अंदाज़ यह है कि वह सुकड्या के कुएँ की ही बात चल रही थी ।''

''लेकिन वह जिस पोटली की बात कर रहे थे वह क्या था ? उसका भला कुएँ से क्या लेना-देना ? पोटलियाँ हैं तो उन्हें कुटिया में रखना चाहिए ...,'' मीना ने कहा ।

''नहीं नहीं ! याद करो, वह क्या कह रहे थे ? सुकड्या ... मेला ... दो दिन ... शक़ नहीं ... मुझे उनकी फुसफुसाहट अच्छी तरह याद है और अब सारी रामकहानी समझ में आ रही है ।''

''अरे लेकिन क्या समझ में आया, यह तो बता !''

''उन सुने हुए शब्दों के आधार पर मैं अपना अंदाज़ लगा रही हूँ ।''

''सुकड्या मेले में गया है ... और दो दिन वापस नहीं लौटेगा,'' यमू ने बताया ।

''सुकड्या पर कोई शक़ नहीं कर सकता,'' गौतमी को सूझी ।

''कुएँ के उस गड्ढे में पोटलियाँ रखेंगे और बाद में उन्हें निकाल लेंगे,'' मीना भी उनमें शामिल हो गयी ।

''इसका मतलब यह हुआ कि उन डाकुओं ने कल जो माल लूटा था, उसकी पोटली वह आज सुकड्या के कुएँ में जो गड्ढा है, उसमें छिपाकर रखनेवाले हैं, सुकड्या मेले में गया है । वह दो दिन नहीं आएगा । उसपर किसी को शक़ हो नहीं सकता । आज डाका डालकर लूट की दूसरी पोटली लाने पर दोनों पोटलियों को एक साथ ठिकाने लगाने पर विचार किया जायेगा, ... तुम्हें क्या लगता है, मीना ?''

''शायद तुम ठीक कह रही हो । सच, अब वे कहाँ डाका डालनेवाले होंगे ?'' सब गंभीर होकर यही सोचने लगी थीं ।

''नहीं ... मैं काका को ज़रूर बताऊँगी,'' यमू बुदबुदायी ।

''काका को क्या बताओगी, यमू ?'' मीना ने पूछा ।

''यही ... इन डाकुओं का रहस्य । काका कल किसी काम से घर आनेवाले थे । मैं उनसे कहूँगी कि इस बात का भी पता लगाएँ ।''

''किसी और चीज़ की तलाश क्यों ? अगर वह हमें ढूँढ़ने को आ जाते तो ?''

''अरे वह गाँव कल ही रात को आनेवाले थे । आते ही क्या हमें तलाशने निकल पड़ेगें ? क्या उन्हें अपने काम नहीं हैं ? और वह तो किसी बड़े काम से आनेवाले थे । हमारे घर पर उन्होंने किसी को मिलने के लिए बुलाया है,'' यमू ने कहा ।

"क्या अपनी खोयी हुई भतीजी और उसकी सहेलियों को ढूँढ़ निकालना कोई बड़ा काम नहीं है ?" मीना ने रूठकर कहा ।

"ए ... चुप रह, मुझे फिर से कोई आवाज़ सुनायी दे रही है ।" गौतमी ने उन्हें शांत किया।

"फिर-से डाकू ?" यमू ने डरकर कहा ।

"डाकू हो या कोई और ! हमें भला किस चीज़ का डर ? हमने थोड़े ही कोई चोरी की है ?"

"तो फिर तू छुपी क्यों थी झाड़ी के पीछे ?"

"वह तो अपनी जान बचाने के लिए । इसका मतलब यह नहीं कि हमें किसी से डरना है।"

"यह तो ठीक है गौतमी, लेकिन अब यहाँ तो छुपने की भी कोई जगह नहीं है । खुली सड़क है और किनारे पर काफ़ी पेड़-पौधे उगे हुए हैं," मीना ने कहा ।

"अरे इसी झाड़ी के पीछे छिप जाएँगे, अब यह हमारे लिए कोई नयी बात तो है नहीं", यमू ने कहा ।

"श ... श ... श ..." गौतमी ने उन्हें शांत रहने का इशारा किया ।

अब बोलने की आवाज़ अधिक साफ़ हो गयी थी । अब भी शब्द तो ठीक से सुनायी नहीं दे रहे थे लेकिन बात करने के ढंग से ऐसा लग रहा था कि वह कुछ भयावह नहीं था–आवाज़ बहुत क़रीब आने पर वे चारों झुरमुट के पीछे छिप गयीं ।

साहस की अगली कड़ी

आवाज़ और पास आ गयी। यह दस बारह आदमियों के आने की आहट सुनाई पड़ रही थी। दूसरी तरफ़ से भी वैसी ही आवाज़ आने लगी थी। अब न जाने क्या हो यह सोचकर वह चारों पेड़ों के पीछे थरथर काँपती खड़ी थीं और अचानक ...

"काका ... !" यमू चिल्लायी। अब दूर नज़र आनेवाले लोग बहुत पास आ गये थे। कुल दस-बारह आदमी थे। कुछ वर्दीधारी पुलिस थे और उनके साथ थे यमू के काका–पुलिस इन्सपेक्टर।

यमू दौड़कर अपने काका के पास जाकर उनसे लिपट गयी।

काका हैरानी भरी नज़र से उन्हें देखते रह गये। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह लड़की इस तरह अचानक कहाँ से प्रकट हो गई।

"यमू, बेटी तुम !"

"काका ...," यमू से कुछ कहा नहीं जा रहा था।

"अरे तेरी सहेलियाँ कहाँ हैं ?"

"काका, वह रही ना ... उस झुरमुट के पीछे ..." यमू पेड़ों की तरफ़ देखने लगी, झाड़ी के पीछे छिपी लड़कियाँ अब धीरे-धीरे बाहर झाँक रही थीं। उन्होंने भी यमू के काका को पहचान लिया था फिर भी, वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। यमू दौड़कर उनके पास चली गयी।

"गौतमी, मीना, स्वाति ... देखो, मेरे काका आ गये हैं। मीना, तुम कह रही थी ना ?"

और फिर बोलते हुए एकदम रुककर उसने पूछा–

"काका ! आप सचमुच हमें ढूँढ़ने आये हैं ?"

"वैसे तो मैं तुम्हारे गाँव किसी और सिलसिले में आया था लेकिन रात वहाँ पहुँचते ही तुम लोगों के ग़ायब होने की ख़बर सुनकर मैं सारा कुछ छोड़कर तुम्हारी तलाश में निकल पड़ा !"

"देखो मीना, अपना सारा काम छोड़कर काका हमें ढूँढ़ने आ गये ! मेरे काका को तुमने

समझ क्या रखा है ?''

''वही मैं तुमसे पूछने जा रहा हूँ–तुमने मुझे समझ क्या रखा है ? कल रात से कितना घुमाया है तुमने मुझे ? ऐं ? कहाँ थीं तुम लोग कल से ? मैं कल तुम्हारे घर पहुँचा तो भाभी ने कहा, 'देवर जी वर्दी मत उतारो ।' मैंने पूछा 'क्यों ?' तो कहने लगी यमू और उसकी सहेलियाँ दोपहर को पातालेश्वर गयी हैं अब तक लौटी नहीं । यमू के पिताजी तो यहाँ नहीं हैं । मीना के चाचा कहने लगे कि इसे ढूँढ़ने जाना होगा । मैंने ही उन्हें यह कहकर मना किया कि आप अकेले मत जाओ, मेरे देवरजी आनेवाले हैं । आते ही ढूँढ़ने जाएँगे । और बस, तब से पूरी रातभर मैंने अपनी फ़ौज समेत सारा पातालेश्वर छान मारा लेकिन तुम लोग कहीं न मिली । सुबह दरिया के पास देखने गया तो वहाँ एक आदमी मरा पड़ा था ।''

''कोई शिकारी,'' यमू ने कहा ।

''शिकारी ? हाँ, तो मैं क्या कह रहा था । उस आदमी को बाघ ने चीर-फाड़कर रख छोड़ा था । इसके बाद बाघ दरिया फाँदकर दूसरे किनारे से जंगल चला गया था, ऐसे निशान मिले । बाघ द्वारा मारे डाले गये आदमी को देखकर तुम लोगों की सुरक्षा को लेकर मैं डर गया । इधर छान-बीन कर रहे हमारे हवलदार को यह थैली मिली । इस पर मीना का नाम लिखा है ।''

''हाँ, यह तो भेलपूरी वाली है । इसे मैं स्कूल ले जाती हूँ, इसलिए इस पर मैंने अपना नाम लिखा है ।''

''यह वहीं सोते किनारे मिली । लेकिन और कुछ पता न चला । चारों तरफ़ आदमी भेजे, जंगल का चप्पा-चप्पा छान मारा तो तुम लोग यहाँ मिलीं ।''

इतने में दूसरी तरफ़ से क़रीब अस्सी पुलिस के जवान आ पहुँचे ।

''साहब ... वहाँ जंगल में कोई लड़की ...,'' कहते-कहते उसका ध्यान लड़कियों की तरफ़ गया ।

''मिल गयीं ?'' उसने पूछा ।

''हाँ, ये रहीं ! अब बताओ तो सही तुम लोग थीं कहाँ ?'' काका ने पूछा ।

''मीना दीदी, मेरे पाँव बिल्कुल थक गये हैं,'' कहकर स्वाति पालथी मारकर ज़मीन पर बैठ गयी।

''सच काका, क्या हम थोड़ी देर आराम कर सकते हैं ? हम बहुत थक गयी हैं ।''

''ठीक है । हम रुकते हैं यहीं पर थोड़ी देर । जाधव, आप गाँव जाकर अपनी जीप ले आइये । मैं इन लड़कियों के साथ यहीं रुकता हूँ । और कदम, आपकी पार्टी ...''

''सुकड्या के कुएँ की तरफ़ ... '' यमू ने काका के अंदाज में पुलिस पार्टी को बताया ।

''मतलब ?''

"मैं बताती हूँ," कहकर यमू ने काका को डाकुओं की सारी योजना बतायी, जो उसने पेड़ों के पीछे से छिपकर सुनी थी।

काका ने कहा, "यह बात है ? जिनकी तलाश में हम यहाँ आये थे, शायद ये वही डाकू हैं। भाई, जाओ जल्दी से। जैसे यह कह रही है, सुकड़्या के कुएँ के गड्ढे से ... "

"काका, सुकड़्या के कुएँ में पथरीली ख़ाली जगह है, उसी को वे लोग गड्ढा कह रहे होंगे," यमू ने कहा।

"लेकिन तुम्हें उस कुएँ के बारे में कैसे पता चला ?" काका ने आश्चर्य ज़ाहिर किया।

"इसे पता नहीं होगा तो और किसे होगा ? काका, आपकी यह भतीजी तो उसी गड्ढे में रात बिताकर आयी है।"

काका के मिलने के बाद अब मुसीबत की छाया तक बाक़ी नहीं थी। मन से चिंता पूरी तरह से हट चुकी थी और सारा क़िस्सा बड़ा दिलचस्प लग रहा था।

"क्या ?" काका ने हड़बड़ाकर पूछा। फिर उन्होंने कहा, "चलो, जीप के आने तक हम उस पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। कल तो तुम लोगों ने हमारी नींद उड़ा रखी थी लेकिन लगता है दिन भर में बहादुरी के कई कारनामे हो चुके हैं। अब ठीक से बताओ मुझे," काका ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा।"

"नींद तो हमारी अपनी भी उड़ी हुई थी। लेकिन जान पर कुछ ऐसी बन आयी थी कि हम तीनों ... ", कहते हुए उन तीनों ने आरंभ से लेकर अंत तक पूरी रामकहानी काका को सुना डाली। बीच-बीच में स्वाति भी अपनी टिप्पणी जोड़ रही थी।

लड़कियाँ अपना क़िस्सा सुना रही थी और काका और उनके सारे सहकर्मी सुनकर हैरान थे। इतनी कच्ची उम्र में लड़कियों ने न जाने किन-किन मुसीबतों के पहाड़ उठाये थे।

"ख़ैर, समय आने पर लड़कियाँ भी यह सब ज़ोख़िम उठा लेती हैं। लेकिन उनके साहस पर हमेशा संदेह क्यों किया जाता है ?" मीना ने जैसे सबके मुँह की बात छीन ली।

"काका, क्या आप अब भी कहेंगे कि लड़कियाँ डरपोक होती हैं ?"

"क्या मजाल है किसी की, जो ऐसा कुछ कहे ?" काका ने कहा।

"काका, अगर आपको उन पोटलियों से काफ़ी माल मिलता है तो हमें भी कोई इनाम दिलाइयेगा ... "

"सारा माल आप ले लीजिए लेकिन यमू को कुछ इनाम अवश्य मिलना चाहिए।" गौतमी ने हामी भरी।

"अरे भाई, सिर्फ़ यमू को ही नहीं, तुम सबको इनाम अवश्य मिलेंगे। लेकिन पहले तो तुम्हारे इस साहस के लिए शौर्य-पदक मिलने चाहिए। क्यों कदम, क्या ख़याल है ?"

"सच है साहब ! इन लड़कियों की कहानी तो बहुत रोमांचक लगती है ।"

जीप अभी आयी नहीं थी न जाने उसके आने में इतनी देर क्यों हो रही थी ? कुछ समय ऐसे ही बीत गया । फिर अचानक काका ने पूछा, "अच्छा लड़कियो, यह तो बताओ कि कुटिया में वह जो बाघ था, वह पत्थर का न होकर असली बाघ होता तो तुम क्या करतीं ?"

"असली बाघ ... !" मीना सोचने लगी ।

"तो काका, हम कुछ-न-कुछ ...-कुछ अवश्य करतीं," गौतमी ने कह दिया ।

"कुछ-न-कुछं यानी क्या ?"

"काका, हम सब मिलकर यानी यह मानकर कि इन लोगों के बीच मैं भी उस ... " यमू कह ही रही थी कि एक कर्कश चीख़ उन्हें सुनायी दी । वह काफ़ी दूर से आयी थी । उस शांत जंगल में आवाज़ गूँज रही थी ।

काका और अब तक लड़कियों की दिलचस्प कहानी सुननेवाले पुलिसवाले झट-से उठ खड़े हुए अभी जब वह उस चीख़ के बारे में सोच ही रहे थे कि उसी दिशा से एक और चीख़ सुन पड़ी। अब वे चीख़ें कहाँ से आ रही थीं–इसके बारे में काका ने अनुमान लगाया । वह लोग जहाँ बैठे थे उसके दाहिने तरफ़ जो घना जंगल था, वहीं से कोई डेढ़ किलोमीटर दूर से वे चीख़ें आ रहीं थीं।

"कदम, तुम दो-तीन आदमी लेकर मेरे साथ चलो–देखते हैं, क्या बात है ?" अपनी पिस्तौल सँभालते हुए काका चल पड़े । दो-चार कदम आगे बढ़कर देखा तो उनके पीछे-पीछे वह चार लड़कियाँ निकल पड़ी थीं ।

"अरे भाई, तुम कहाँ जा रही हो ! वहाँ पता नहीं और क्या मुसीबत खड़ी है । किसी चक्कर में फँस गयी तो ... "

"काका, कल से हमने न जाने क्या-क्या मुसीबतें झेलीं हैं। एक और सही और फिर अब आप भी तो हमारे साथ हैं, फिर काहे का डर ?" यमू ने कहा ।

"तुम लोग थकी हुई हों। आराम नहीं करोगी ?" काका ने पूछा ।

"ना ! ना ! हमारी थकान तो कब की मिट चुकी है। इतनी देर से आराम ही तो कर रहे थे । क्यों गौतमी ?" मीना ने पूछा ।

"और क्या ? जब तक जीप नहीं आती, यहाँ बैठे-बैठे हम क्या करेंगे ? ... "

गौतमी की बात सुनकर काका ने कहा, "अब तो लगता है बाघ मारने का ही इरादा है। हो सकता है, कलवाले बाघ से फिर मुलाकात हो जाय । बहादुरी का प्रमाणपत्र तो तुम्हें मिल ही चुका है, चलो !"

काका को लगा कि उन्हें साथ ले जाने में भी कोई मुसीबत नहीं है। सब उस दिशा में चल पड़े, जिधर से चीख़ सुन पड़ी थी।

बड़ी सड़क छोड़कर वह उस जंगल में घुस गये। झाड़ी उनकी उम्मीद से कहीं अधिक घनी निकली। हर दस क़दम चलने के बाद लगता कि रास्ता बंद हो चुका है। फिर जैसे-तैसे घनी शाखाओं को दूर हटा-हटा कर मार्ग बनाना पड़ता। कल के तूफ़ान और बारिश से सूखे पत्ते नीचे गिर चुके थे। धरती पर उनका अंबार लग गया था। बारिश की वज़ह से पत्तों में चिपचिपाहट भी आ गयी थी। गीली ज़मीन और पत्तों पर फिसलकर गिरने का डर लगातार बना हुआ था।

बीच में ही एक पूरा-का-पूरा पेड़ गिरकर आधा झुककर पड़ा था। उसकी अच्छी-ख़ासी कमान बन गयी थी ! लाँघकर जाने के लिये वह ऊँची थी और उसके नीचे से गुज़रने के लिए काफ़ी नीचे झुकना ज़रूरी था। लेकिन दूसरा कोई उपाय नहीं था। काका और पुलिस के दो जवान इसके नीचे से गुज़र गये। स्वाति और यमू भी चली गयी। अब मीना कमान के नीचे घुसने ही वाली थी कि गौतमी ने उसके मुँह पर हाथ रखकर उसे पीछे खींच लिया। इससे पहले कि किसी के समझ में कुछ आए उसने साथ खड़े पुलिस के जवान से डंडा खींच लिया और कमान पर ज़ोर-ज़ोर से प्रहार करने लगी। उसने तीन-चार प्रहार किये और बात क्या है, इसे फ़ौजदार कदम भी समझ गये। उन्होंने भी अपना डंडा निकाला और उसके साथ ज़ोर-ज़ोर से कमान पर मारना शुरू किया।

कुछ ही देर में एक भयावह पीला साँप कमान से नीचे गिर पड़ा था–बेजान होकर।

"आस्तिक आस्तिक काला डोरा !"

"आस्तिक आस्तिक काला डोरा," यमू ने फ़ौरन कहा।

"अरे अब तो वह मर चुका है–अब यह मंत्र किस काम का ? पहले कहती तो शायद ...।"

"लेकिन मैंने पहले उसे देखा ही कहाँ जो मैं ... ?"

"ख़ैर, शुक्र है कि मैंने इसे देख लिया–मीना जैसे ही झुककर कमान के नीचे घुस रही थी, मैंने इसे ऊपर से सरसराते आते देखा," गौतमी ने कहा।

"और तुम उसी के पास खड़ी थी–इसीलिए तुमने उसे मार कर मीना को बचा लिया !" काका ने मृत साँप को अपनी छड़ी से उलट-पुलटकर देखते हुए कहा। गौतमी और कदम के प्रहारों से साँप का मुँह और शरीर छलनी हो गया था लेकिन उसकी पूँछ अभी भी छटपटा रही थी।

"साहब," फ़ौजदार कदम ज़मीन पर फैले लंबे-चौड़े साँप को देखकर बोले, "यह लड़की तो बड़ी बहादुर निकली ! कोई और होती तो साँप को देखकर चीख़ पड़ती।"



"फ़ौजदार साहब ! साँप देख नहीं सकते लेकिन सुन लेते हैं, यह मैं जानती थी। इसलिए मेरे चीख़ने का तो सवाल ही नहीं था। लेकिन मीना ज़रूर चीख़ पड़ती, इसलिए मैंने उसका मुँह बंद कर दिया। वह तो शहर की है, वह क्या जाने ?" गौतमी ने कहा।

"कदम, इसे यों ही लटका कर रख दीजिए इसी डाल पर। जाते वक्त यहाँ से हम इसे उठाकर गाँववालों को दिखाने ले जाएँगे," काका ने कहा।

"हाँ, उन्हें अपनी गौतमी के साहस का परिचय दिलाने के लिए," यमू ने कहा। अपनी सहेली के प्रति गर्व उसकी बात में साफ़-साफ़ झलक रहा था।

वह सब और आगे बढ़े। अब झाड़ी उतनी घनी नहीं थी और एक तरफ़ तो काफ़ी खुली जगह पड़ी थी। वहीं पर ...।

"श् श् श् !" ... काका ने सब को चुप होने का इशारा किया। सबने सामने देखा। वह दृश्य देखकर एक कदम भी आगे बढ़ाना संभव नहीं था। काका चुप्पी का इशारा न भी करते तो किसी के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकलता। बहुत रोमांचकारी दृश्य था।

आगे घमासान युद्ध जारी था। बीच-बीच में ऊपर उठती कुल्हाड़ी की धार चमकती दिखायी देती और फिर ज़ोरदार गुर्राहट और कुल्हाड़ी वाले हाथ पर हमला।

अब यह स्पष्ट हो गया था कि बाघ को सामने देखकर वह आदमी चीख़ पड़ा था और फिर खुद पर क़ाबू पाकर उसने अपनी कुल्हाड़ी से बाघ का सामना करना शुरू किया था। यह भी ज़ाहिर था कि लड़ाई काफ़ी देर से चल रही थी क्योंकि वह आदमी खून से लथपथ था। और अपने शिकार से चुनौती पाकर बाघ भी तैश में आ गया था। उस आदमी का कोयले जैसा काला शरीर और बाघ का पीला धारीदार अंग एक दूसरे से भिड़ता तो सारी भिड़न्त बहुत भयानक लगती।

काका और कदम पिस्तौल निकालकर मौक़े की ताक में थे। उस संघर्ष में गोली चलाना भी बहुत मुश्किल का काम था। गुस्सैल बाघ पंद्रह-बीस आदमी के लिए भी भारी होता है। अब तो उसे गोली भी लगी हुई थी। वह ज़ख़्मी हो चुका था, इसलिए उसका गुस्सा उफन-उफनकर बह रहा था।

तभी ठा ... ठा ... ठ्ठा ... ठ्ठा ... बंदूक़ की चार गोलियाँ छूटीं और बाघ ने हवा में एक ऊँची छलाँग लगायी। उसने अपने शिकार को छोड़ दिया और अपना मुँह मोड़ लिया। अब घूमकर वह इन लोगों को आँखों में अंगारे लेकर घूर रहा था। दूर से भी, उसकी आँखों की हिंस्र चमक अब देखनेवाली थी।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा था–वहाँ खड़े सभी बुत बने खड़े रहे। संकट अपने पैरों पर चलकर उनकी ओर आ रहा था। अब कोई भी हलचल करना ख़तरनाक था। धीरे-धीरे उनकी

तरफ़ आनेवाले बाघ ने काफ़ी आगे आकर छलाँग लगायी ही थी कि–

"ठ्ठो" ... काका के पिस्तौल से निकली गोली सीधे उसके माथे में जा लगी। पहले भी वह चार गोलियाँ खा ही चुका था। लेकिन इस गोली ने अपना काम पूरा कर दिया। वह छटपटाया और उछलकर नीचे गिर गया। उसका धारीदार शरीर कुछ देर तक तड़पता रहा और फिर शांत हो गया।

फिर भी काका ने सबको वहीं ठहरने का इशारा किया। वह आगे बढ़े हाथ में पिस्तौल लिये आहिस्ता-आहिस्ता डग भरते हुए वह बाघ के पास जा पहुँचे। अब उन्हें यक़ीन हो गया था कि बाघ मर चुका है।

"कदम !" उन्होंने पुकारा ... "बाघ मर चुका है।"

बाघ की मौत के बारे में सुनकर सभी आगे बढ़े। बाघ से जूझनेवाला आदमी अब ज़मीन पर लेट चुका था। कदम ने उसके पास जाकर उसकी नब्ज़ देखी और फ़ौरन हाथ नीचे रख दिया।

"साहब, यह भी मर चुका है।"

"लगता है यह पोटली वहीं छोड़ आया है।" यमू ने कहा।

"व्याघ्रेश्वर ने उसे सज़ा दी है," मीना ने कहा।

"क्या मतलब ?" काका ने पूछा।

"काका, यह उन तीन डाकुओं में से एक है, जो वहाँ पोटली रखने गया था।"

"मैंने दूर से देखा था, लेकिन इसकी पीठ पर निकली कूबड़ मैं भूल नहीं पाई, यही है वह," गौतमी ने ज़मीन से सटी हुई उसकी कूबड़ को देखते हुए कहा।

"हाँ, यह वही है। मैं भी अच्छी तरह जानती हूँ," मीना ने कहा।

"पक्का ?"

"जी हाँ, बिल्कुल ! इसे मैंने उन लोगों के साथ देखा है," मीना ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा।

"कदम, इन लड़कियों जैसा कहा है–यह मान भी लिया जाय तो यह उन डाकुओं में से एक है। ख़ैर, अब यह भी मर चुका है। जीवित होता तो इसे अस्पताल ले जाने की जल्दी होती, लेकिन अब वह बात नहीं है। फ़िलहाल इनको यहीं पड़ा रहने दो और तुम लोग भी यहीं पर रुको। मैं इन दोनों लाशों को उठवाने का इन्तज़ाम करता हूँ ... तब तक आप लोग यहीं पर रहिये," काका ने लड़कियों की तरफ़ मुड़कर कहा, "चलो, अब, वापस घर चलते हैं।"



VI

साहसी लड़कियाँ

वापसी में कुछ देर तक किसी ने कुछ नहीं कहा। फिर अचानक काका बोल पड़े –

"कदम, अगर यह आदमी ज़िंदा रहता तो औरों का पता लगाना आसान हो जाता।"

"काका, अब तो आपको हमें अपनी पार्टी में शामिल कर लेना चाहिए," यमू ने कहा।

"वह क्यों ?"

"क्योंकि मैं उनका अता-पता जानती हूँ। हमारी बहादुरी तो हमने दिखा ही दी है। क्या अब भी हम आपके काम नहीं आयेंगे ?"

"ज़रूर ! लेकिन पहले अपने घरवालों से पूछ लो। थोड़ी बड़ी हो जाओ फिर सोचेंगे," काका ने चुटकी ली।

"कदम ! अब इस लड़की ने जो बताया है, उस मंदिर के पीछे पड़ जाइये।"

"जी साहब ! और ... "

"और क्या ?"

"नहीं, मैं यह कह रहा था कि इन लड़कियों की नज़र बड़ी तेज़ है और याददाश्त भी कमाल की है। क्यों न हम उन डाकुओं को पकड़ने के बाद इन्हें उनको पहचानने के लिए बुला लें।"

"हाँ हाँ, ज़रूर ! हम उन्हें कहीं से भी पहचान सकती हैं।" लड़कियों ने बड़े जोश से इस सूचना का स्वागत किया। और फिर अचानक स्वाति चीख़ पड़ी। अब वह लोग उस पेड़ की कमान तक आ गये थे। कुछ ही देर पहले गौतमी द्वारा मारा वह साँप अब भी उस डाल पर लटक रहा था, बिल्कुल वैसे ही, जैसा कि वे उसे लटकाकर छोड़ गये थे। पहले उसी को ज़िन्दा समझकर स्वाति चीख़ पड़ी थी।

कदम ने साथ वाले पेड़ से एक लंबी शाखा तोड़ ली। उसपर वह साँप लटकाया और लड़कियों से कहा, "पकड़ो !"

शाखा का एक सिरा गौतमी ने पकड़ा और दूसरा सिरा मीना ने और वे मज़े से सबके साथ चलने लगीं ।

बाघ और आदमी की मुठभेड़ की वज़ह से काफ़ी देर हो चुकी थी । बारिश रुक गई थी और अब चमकदार धूप निकल आयी थी । वह लोग जब वापस आये तब उन्हें जीप उनकी प्रतीक्षा वहाँ खड़ी मिली।

काका ने कदम को कुछ सूचनाएँ दीं । मुर्दा साँप की पोटली को उन्होंने जीप के आगे के हिस्से में रखा और लड़कियों से कहा, "चलो, बैठ जाओ अंदर ! कदम, मैं इनके साथ जाता हूँ । आप अपनी पार्टी के साथ आइये । मैं दूसरी जीप भेज दूँगा ।"

"ठीक है साहब ! मैं सब लेता आऊँगा ।"

चारों फटाफट जीप में जा बैठीं ।

अब बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं था । चारों तरफ़ प्रसन्नता थी । कुनकुनी धूप और ताज़ी हवा के झोंके ! मन से आशंका के बादल छँट चुके थे । रातभर जिस जोश में आकर उन्होंने जो बहादुरी भरे कारनामे किये थे, उसकी थकान अब उन्हें महसूस होने लगी थी । बातें बंद हुईं। धीरे-धीरे आँखों पर नींद का असर होने लगा ।

"जाधव, जीप ज़रा सँभलकर चलाना कहीं झटकों से इनकी नींद न टूट जाये ।"

एक दूसरे के कंधे पर सिर रखकर सोयी हुई बहादुर वीरांगनाओं को काका बड़े ममत्व से देख रहे थे । कोई कुछ बोल नहीं था । सिर्फ़ जीप के चलने की आवाज़ आ रही थी । उस आवाज़ में भी काका को उन लड़कियों की बहादुरी की प्रतिध्वनि सुनायी दे रही थी । उन लड़कियों को अपलक देखते हुए उस प्रतिध्वनि को काका अपने कानों में भर लेना चाहते थे । और साथ-साथ मन-ही-मन कह भी रहे थे–

"ग़ज़ब की हैं ये लड़कियाँ ! सचमुच ग़ज़ब की ! जीवट से भरी हुईं ।"

जंगल की एक रात चार बहादुर लड़कियों — मीना, स्वाति, गौतमी और यमुना के साहसिक कारनामों से भरी एक रोमांचक कथा-यात्रा है। *पातालेश्वर* की यात्रा पर निकलीं ये चारों सैलानी लड़कियाँ जंगल के अँधेरे में भटककर एक दूसरे से बिछड़ जाती हैं। इसके साथ ही जंगली जानवरों, ख़ूँख़ार दरिन्दों, डाकुओं और गुण्डों से उनका सामना होता है। बीहड़ और अंधे कुएँ में पड़ी रहने के बाद, जंगल के आतंक और अँधेरे से लोहा लेती हुई ये लड़कियाँ एक बार फिर मिलती हैं — एक दूसरी मुहिम के लिए — जहाँ पुलिस का दस्ता भी उनकी सहायता के लिए तैयार खड़ा है।

विस्मय, साहस और रोमांच भरे प्रसंगों से भरपूर एक ऐसी दिलचस्प क़हानी, जो बार-बार रोंगटे खड़े कर देती है और जिसे सुना रही हैं **लीलावती भागवत**।



ISBN 81-7201-535-6

पचीस रुपये